हिन्दुस्तान 1936 सत्य • सार्थक • सटीक

अंतरिक्ष की खास सैर

अंतरिक्ष विज्ञान की दुनिया में एक नई क्रांति हुई है, जिसका स्वागत होना चाहिए। एक निजी कंपनी एक्सिओम ने अभियान चलाया था, जिसके तहत चार अंतरिक्ष यात्री अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से होकर लौटे हैं। सबसे खास यह कि इस अंतरिक्ष यान में तीन सीटों के लिए भुगतान किया गया था। यह भी खास कि यह भुगतान दुनिया के तीन अमीरों ने नहीं, बल्कि तीन देशों की राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियों ने किया था। पहली बार तुर्किए के भी एक अंतरिक्ष यात्री को सफर का मौका मिला और यह तुर्किए के लिए बड़ी कामयाबी है। दरअसल, जिन देशों की अंतरिक्ष एजेंसियां छोटी हैं, वैसे देश निजी अंतरिक्ष कंपनियों की मदद से अपनी इच्छाओं और अध्ययन को पूरा करना चाहते हैं। चूंकि अंतरिक्ष के सफर को स्वतंत्र रूप से साकार करना एक बेहद महंगा और बेहद कठिन काम है, इसलिए इस विरल सेवा में निजी कंपनियों का उतरना किसी खुशखबरी से कम नहीं है। आश्चर्य नहीं कि एक निजी कंपनी के दम पर तुर्किए, स्वीडन, इटली में जश्न का माहौल है, क्योंकि इन देशों के नागरिक अंतरिक्ष की सैर कर आए हैं।

अंतरिक्ष यात्रियों की एक अखिल यूरोपीय चौकड़ी शुक्रवार की सुबह फ्लोरिडा तट पर अंतरिक्ष से नीचे उतरी और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए निजी कंपनी एक्सिओम स्पेस का तीसरा निजी मिशन पूरा हो गया। अभियान का नेतृत्व करने वाले एक्सिओम के मुख्य अंतरिक्ष यात्री माइकल लोपेज-एलेग्रिया, एक स्पेनिश-अमेरिकी नागरिक हैं और 65 की उम्र में भी एक सक्रिय अंतरिक्ष यात्री हैं। उन्हें नासा के साथ काम करने का भी लंबा अनुभव है। एलेग्रिया के नेतृत्व में यह अभियान अंतरिक्ष भ्रमण का कार्यक्रम नहीं था, बल्कि इस अभियान के तहत विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक प्रयोग किए गए हैं, जिनमें सभी अंतरिक्ष यात्रियों ने भाग लिया है। एक्सिओम के अनुसार, अंतरिक्ष यात्रियों ने परस्पर सहयोग से 30 से ज्यादा प्रकार के शोध-अध्ययन को अंजाम दिया है। सभी यात्रियों ने पेशेवर अंतरिक्ष यात्रियों जैसा प्रदर्शन किया है। ध्यान रहे, अभियान शुरू में दो सप्ताह तक चलने वाला था, पर खराब मौसम की वजह से वापसी यात्रा में कई दिनों की देरी हुई। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में यात्रियों को अतिरिक्त 18 दिन रुकना पड़ा। लोपेज-एलेग्रिया के साथ तुर्किए के पायलट और वायु सेना के कर्नल अल्पर गेजेरवसी, इतालवी वायु सेना के कर्नल वाल्टर विलादेई और स्वीडन के मार्कस वांड्ट ने सदा के लिए एक इतिहास रच दिया है।

आश्चर्य नहीं कि एक निजी कंपनी के दम पर तुर्किए, स्वीडन, इटली में जश्न का माहौल है, क्योंकि इन देशों के नागरिक अंतरिक्ष की सैर कर आए हैं।

अंतरिक्ष विज्ञान में निजी क्षेत्र के लिए यह बहुत उत्साह बढ़ाने वाली बात है। एक्सिओम स्पेस की स्थापना 2016 में नासा के पूर्व वैज्ञानिक माइकल सुफ्रेडिनी और उद्यमी गफरियन ने की थी। यह कंपनी न केवल अंतरिक्ष यात्रा को संभव बना रही है, बल्कि यह स्पेससूट व स्पेस स्टेशन के विकास में भी लगी है और दुनिया की सबसे कुशल अंतरिक्ष एजेंसी नासा की भी मदद कर रही है। यह उन तमाम स्टार्टअप के लिए प्रेरणादायी है, जो अंतरिक्ष के क्षेत्र में काम करना चाहते हैं। यह भविष्य में एक बहुत बड़ा व्यवसाय हो सकता है। भारत में 18 से ज्यादा स्टार्टअप ऐसे हैं, जो अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र में सक्रिय हैं। क्या वे किसी अंतरिक्ष अभियान को स्वतंत्र रूप से पूरा कर सकते हैं? कमाई का यह बड़ा क्षेत्र है, एक्सिओम ने एक सीट के लिए लगभग 5.50 करोड़ डॉलर की वसूली की थी, जबकि सूचना है कि हंगरी ने अगले अभियान के लिए एक सीट 10 करोड़ डॉलर में खरीदी है।

फौजी दखलंदाजी के खिलाफ जनादेश

यहां स्कैन करें

टीसीए रंगाचारी | पूर्व राजनयिक

इमरान खान खुलकर फौज की लानत-मलामत कर रहे थे, फिर भी उन्हें उम्मीद से कहीं अधिक सीटें प्राप्त हुई हैं। लोगों ने संभवतः उनके विद्रोही तेवर को पसंद किया है।

पाकिस्तान के आम चुनावों के नतीजे बता रहे हैं कि कौमी असेंबली (संसद) में पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी जरूर है, लेकिन उससे भी अधिक संख्या उनकी होगी, जो निर्दलीय यानी तकनीकी तौर पर बिना किसी दलीय चुनाव-चिह्न के मैदान में उतरे। इनमें से ज्यादातर नेताओं को इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) का समर्थन प्राप्त है। हां, उनकी असल संख्या कितनी है, यह अभी साफ नहीं है। आधुनिक लोकतंत्र में दलीय प्रणाली अहम मानी जाती है और इसमें उन प्रतिनिधियों का प्रभाव कम समझा जाता है, जो किसी पार्टी से जुड़े हुए नहीं हैं। मगर पाकिस्तान इस मामले में अलहदा साबित हुआ है।

फिलहाल, यह स्पष्ट है कि पाकिस्तान में गठबंधन की सरकार बनने जा रही है। इसके प्रयास शुक्रवार देर रात से ही शुरू हो गए थे, जब यह साफ हो चला था कि किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं आने वाला है, तब अपने समर्थकों को संबोधित करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने कहा था कि पीएमएल-एन चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी बन गई है और गठबंधन सरकार के लिए हम पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) की तरफ हाथ बढ़ाना चाहते हैं। उन्होंने अपनी तकरीर में शहबाज शरीफ को पीपीपी के साथ बातचीत के लिए अधिकृत भी कर दिया था।

मगर जनादेश के कुछ अन्य संकेत भी स्पष्ट हैं। मसलन, पाकिस्तानी फौज ने उस तरह से नवाज शरीफ का साथ नहीं दिया, जिसके कयास चुनाव-पूर्व लगाए जा रहे थे। आरोप था कि फौज उन सबका दमन कर रही है, जो नवाज शरीफ की राह में चुनौती पेश कर रहे हैं। इमरान खान का उदाहरण सबके सामने था। फौज से सीधी जंग मोल लेने के कारण वह चुनाव से बाहर कर दिए गए थे। यहां तक कि उनकी पार्टी पीटीआई को भी खत्म कर दिया गया था और उसके तमाम बड़े नेता फौज के निशाने पर थे। यही वजह है कि जो थोड़े-बहुत पीटीआई नेता बचे रहे गए, उनको निर्दलीय चुनाव लड़ना पड़ा। चूंकि चुनाव में पीटीआई समर्थकों को बड़ी जीत मिली है, इसलिए इमरान खान के लिए यह आरोप लगाना काफी मुश्किल होगा कि फौज ने नवाज शरीफ के पक्ष में बल्लेबाजी की है। अब आरोप यह है कि अगर फौज ने हस्तक्षेप नहीं किया होता, तो उनकी पार्टी पीटीआई को पूरा बहुमत मिल जाता। हालांकि, साल 2018 में, जब फौज ने इमरान खान को प्रधानमंत्री बनाने की मशक्कत की थी, तब भी पीटीआई को बहुमत हासिल नहीं हुआ था।

इसका मतलब यह नहीं माना जाना चाहिए कि फौज ने चुनाव को बिल्कुल प्रभावित नहीं किया। अलग-अलग स्रोतों से जो वीडियो फुटेज आए हैं, उनमें यह तो दिखता ही है कि चुनाव में धांधली करने की कोशिशें की गईं। हां, वे पिछले आम चुनाव जैसी नहीं थीं, क्योंकि तब के फुटेज से फौज की चौतरफा फजीहत हुई थी। मुमकिन है, उसने पिछली घटना से सबक लिया हो।

इस जनादेश से यह संकेत मिलता है कि पाकिस्तानी नौजवान खास तौर से जम्हूरियत में फौजी दखलंदाजी के खिलाफ हैं। इमरान खान खुलकर फौज की लानत-मलामत कर रहे थे और उन्हें उम्मीद से कहीं अधिक सीटें प्राप्त हुई हैं, जो यह बताता है कि लोगों ने उनको संभवतः इसीलिए पसंद किया, क्योंकि उन्होंने विद्रोही तेवर अपनाया हुआ था। हालांकि, इसकी पुष्टि के लिए हमें मत-प्रतिशत जैसे कुछ अन्य आंकड़ों की भी जरूरत होगी। वैसे, जिस तरह से पीएमएल-एन को सीटें मिली हैं, उससे यह नहीं लगता कि फौज की पसंद होने के कारण लोग उससे नाराज हैं। पंजाब सूबे की असेंबली के नतीजे इसी का संकेत देते हैं।

यहां मैंने पंजाब प्रदेश की इसलिए चर्चा की, क्योंकि पाकिस्तान की राजनीति में इस सूबे का खास महत्व है। माना जाता है कि यदि पंजाब और केंद्र की सत्ता में एक ही पार्टी रहे, तो हुकूमत को चलाने में दिक्कतें पेश नहीं आती हैं। मुझे 1988 का चुनाव याद आ रहा है, जब मैं वहां अपनी सेवाएं दे रहा था। उस चुनाव में भी फौज की पसंद नवाज शरीफ थे, लेकिन खंडित जनादेश पीपीपी नेता बेनजीर भुट्टो के पक्ष में आया। तब केंद्र की सत्ता बेनजीर ने संभाली और पंजाब सूबा नवाज शरीफ के जिम्मे रहा। उस समय विपक्षी दल के नेता बेशक इस्लामाबाद में रहते थे, लेकिन व्यावहारिक तौर पर यह जिम्मेदारी नवाज शरीफ ही निभाते रहे। बेनजीर के लिए सरकार चलाना काफी कठिन साबित हुआ था।

अभी पीएमएल को पीपीपी की जरूरत है, तो पाकिस्तान को पांच साल तक चल सकने वाली एक स्थायी सरकार की। यहां साल 2008 का दौर याद आता है, जब इन्हीं दोनों पार्टियों की मिली-जुली सरकार बनी थी। नवाज शरीफ की इस मामले में जरूर सराहना की जानी चाहिए कि उस वक्त उन्होंने पीपीपी सरकार को अस्थिर करने का कोई प्रयास नहीं किया। संभवतः दोनों राजनीतिक दल यह समझ रहे थे कि उनकी आपस की लड़ाई में फौज का पलड़ा हमेशा भारी रहता है। क्या इस बार भी एक स्थिर सरकार बनेगी?

सवाल यह भी है कि नई सरकार के साथ भारत के रिश्ते कैसे रहेंगे? फिलहाल इसके बारे में कुछ कहना जल्दबाजी होगी, क्योंकि भारत या कश्मीर पाकिस्तान चुनाव के मुद्दे नहीं थे। राजनीतिक दलों के अपने घोषणापत्रों में भले ही भारत का नाम लिया गया, लेकिन यह पाकिस्तान की सियासत का हिस्सा है। फिलहाल नई सरकार का पूरा ध्यान अपनी अर्थव्यवस्था को उबारने, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों का कर्ज चुकाने, बेरोजगारी दूर करने या गरीबी उन्मूलन पर ही होगा। हिन्दुस्तान के साथ ताल्लुकात बेहतर बनाने के बारे में सोचने की उसे अभी फुरसत ही कहां? वैसे भी, भारत पर आम चुनाव का खुमार चढ़ने लगा है, और कोई भी सरकार ऐसे मौकों पर इंतजार करना ही पसंद करती है। मसलन, साल 2014 के चुनाव से पहले कमोबेश यह तय था कि पाकिस्तान हमें 'मोस्ट फेवर्ड नेशन' का दर्जा देने जा रहा है। दस्तावेज पर बस दस्तखत होने शेष थे। मगर पाकिस्तान ने हिन्दुस्तान में नई हुकूमत आने के बाद इस पर आगे न बढ़ने की सोची, और आज तक यह दर्जा फाइलों में ही बंद है।

बहरहाल, नवाज शरीफ व्यक्तिगत तौर पर भारत-विरोधी नहीं हैं। मगर चूंकि वहां सत्ता की बागडोर फौज के हाथों में है, इसलिए तय उसे ही करना है, इस्लामाबाद नई दिल्ली के कितना करीब आए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

लाइब्रेरी में सेंधमारी से झलकी साइबर युद्ध की भयावहता

यहां स्कैन करें

हरजिंदर | वरिष्ठ पत्रकार

किताबों की चोरी पुस्तकालयों के लिए कोई नई बात नहीं है। आप किसी भी लाइब्रेरियन से मिलें, वह इसके बहुत से किस्से सुना देगा। पुस्तकालयों के सदस्य और पाठक मौका मिलते ही अपनी पसंदीदा किताब को पार कर लेते हैं। ऐसी चोरियां अक्सर फुटकर स्तर होती हैं और पुस्तकालय की पूरी संपदा पर होने वाला उनका नुकसान बहुत बड़ा नहीं होता।

ऐसा नहीं होता कि चोर बड़ी संख्या में आएं और ढेर सारी किताबें उठाकर ले जाएं। इतिहास में पुस्तकालय को जला देने का जिक्र तो कई बार आता है, पर उन्हें लूट ले जाने का जिक्र शायद ही कभी आया हो। दरअसल, किताबों में जो ज्ञान पाया जाता है, वह लुटेरों के किसी काम का नहीं होता। इसीलिए दुनिया के विशाल, भव्य और ऐतिहासिक पुस्तकालयों में भी बहुत ज्यादा सुरक्षा व्यवस्था की जरूरत नहीं महसूस की जाती। इसीलिए लंदन की ब्रिटिश लाइब्रेरी में पिछले दिनों हुई सेंधमारी बहुत चौंकाती है। यह दुनिया का सबसे बड़ा पुस्तकालय न भी हो, तब भी सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकालय तो है ही। यह उस देश का पुस्तकालय है, जिसने कभी दुनिया के बड़े हिस्से पर राज किया था और किताबों के अलावा उस दौर के करोड़ों दस्तावेज इसमें सहेजे गए हैं। अनुमान है, इसकी किताबों व दस्तावेजों की कुल संख्या 20 करोड़ के आस-पास होगी।

जिस तरह से एक लाइब्रेरी को ठप्प किया गया, वैसा ही निशाना किसी शहर की बिजली व्यवस्था, जल आपूर्ति पर भी साधा जा सकता है।

यह पुस्तकालय उस ब्रिटिश संग्रहालय का हिस्सा है, जिसकी स्थापना सन् 1753 में हुई थी। तब से दुनिया भर के शोधार्थियों की यह पसंदीदा जगह है। 19वीं सदी के लगभग एक ही दौर में दो प्रसिद्ध विचारकों ने यहीं बैठकर अध्ययन किया था और दुनिया को दो अनमोल ग्रंथ दिए थे। एक थे कार्ल मार्क्स, जिन्होंने यहीं बैठकर *दास कैपिटल* की तैयारी की थी। दूसरे थे दादा भाई नौरोजी, जिन्होंने यहीं पर बैठकर किताब *पोवर्टी ऐंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया* लिखी थी। ये दोनों किताबें आधुनिक दौर में आर्थिक शोषण के दो पक्षों को उजागर करती हैं।

ब्रिटिश लाइब्रेरी की इस महिमा से अलग हम बात कर रहे थे चोरी की। कुछ समय पहले 'रायसिदा' नामक एक साइबर गिरोह ने इस लाइब्रेरी के वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क में सेंध लगा दी, यानी आईटी की भाषा में कहें, तो उसे हैक कर लिया। पुस्तकालय के कंप्यूटर सिस्टम ने काम करना बंद कर दिया। रायसिदा की ओर से मांग की गई कि अगर छह लाख पौंड के बिटक्वाइन उनके हवाले कर दिए गए, तो वह सिस्टम को बहाल कर देगा, वरना लाइब्रेरी का 600 गिगा बाइट डाटा या करीब पांच लाख फाइलें इंटरनेट के बदनाम तहखाने डार्क वेब में पहुंचा दी जाएंगी, जहां से कोई भी उन्हें डाउनलोड कर सकेगा।

लाइब्रेरी के महत्व को देखते हुए छह लाख पौंड की यह रकम बड़ी नहीं थी। निजी कंपनियां तो चुपचाप ऐसे हैकर्स को रकम देकर छुटकारा पा लेती हैं। मगर ब्रिटिश लाइब्रेरी जैसे सरकारी संस्थान के लिए यह आसान नहीं था। उसने फिरौती देने से इनकार कर दिया और उसका बहुत सा डाटा काले कारोबार की दुनिया के हवाले हो गया। सेंधमारी की इस घटना को तीन महीने बीत चुके हैं और अभी भी पुस्तकालय का सारा कामकाज पहले की तरह सामान्य नहीं हो पाया है।

बहरहाल, ब्रिटिश लाइब्रेरी में जो हुआ, वह साइबर अपराध का मामला तो है ही, साथ ही हम इससे यह अंदाज लगा सकते हैं कि रक्षा विशेषज्ञ जिस साइबर युद्ध की आशंका जता रहे हैं, उसका स्वरूप कैसा हो सकता है। परंपरागत युद्धों में तो सैन्य हमलों के जरिये महत्वपूर्ण नागरिक और सैनिक बुनियादी ढांचे को तहस-नहस करके ठप्प किया जाता था। पर अब यह काम एक साइबर हमले से हो सकता है और आपकी किसी भी व्यवस्था का कंप्यूटर नेटवर्क में सेंध लगाकर ही ठप्प किया जा सकता है। जिस तरह से एक लाइब्रेरी को ठप्प किया गया, वैसा ही निशाना किसी शहर की बिजली व्यवस्था, जल आपूर्ति व्यवस्था या यातायात व्यवस्था पर भी साधा जा सकता है।

यानी हम अचानक ही एक ऐसे दौर में पहुंच गए हैं, जहां युद्ध के पुराने खतरे अभी बिल्कुल टले नहीं हैं; एक और विश्व युद्ध का खतरा अभी भी हमारा दुःस्वप्न बना हुआ है। इसी बीच साइबर युद्ध के नए खतरे खड़े हो गए हैं। ऐसे में, सुरक्षा तैयारियों को अब कई तरह से विस्तार देने की जरूरत है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

महापुरुष दयानंद सरस्वती

उन्नीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध भारत के इतिहास का स्वर्ण प्रभात है। कई पावन चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर इस समय इस पुण्यभूमि में अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती भी उन्हीं में से एक महाप्रतिभा मंडित महापुरुष हैं। शासन बदला, अंग्रेज आए, संसार की सभ्यता एक नए प्रभाव से बही, बड़े-बड़े पंडित, विश्व साहित्य, विश्व ज्ञान, विश्व मैत्री की आवाज उठाने लगे, लेकिन भारत उसी प्रकार पौराणिक रूप के मायाजाल में भूला रहा। इस समय ज्ञान स्पर्द्धा के लिए समय को फिर आवश्यकता हुई और महर्षि दयानंद का यही अपराजित प्रकाश है। वह अपार वैदिक ज्ञानराशि के आधार स्तंभ स्वरूप अकेले बड़े-बड़े पंडितों का सामना करते हैं।

चरित्र, स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि में जो आदर्श महर्षि दयानंद सरस्वती में प्राप्त होते हैं, उसका लेश-मात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा में संभव नहीं है। जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नतमना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा होता है, तो महर्षि दयानंद सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खंडन हैं। महर्षि दयानंद जी से बढ़कर भी मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता। हमें अपने सुधार के लिए क्या-क्या करना चाहिए? हमारे सामाजिक उन्नयन में क्या-क्या और कहां-कहां रुकावटें हैं? हमें मुक्ति के लिए कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए, यह महर्षि दयानंद सरस्वती ने अच्छी तरह समझाया है। आर्य समाज की प्रतिष्ठा, उसकी प्रगति एक दिव्य स्फूर्ति की प्रगति है। नवीन विचारों के इस युग में देश की महिलाओं, पतितों तथा ब्राह्मणेतर जातियों के अधिकार के लिए महर्षि दयानंद तथा आर्य समाज से बढ़कर किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जो जागरण भारत में दिखाई पड़ता है, इसका संपूर्ण श्रेय आर्य समाज को है। स्वधर्म में दीक्षित करने का यहां इसी समाज से श्रीगणेश हुआ है। भिन्न जाति वाले बंधुओं को उठाने तथा ब्राह्मण-क्षत्रियों के प्रहारों से बचाने का उद्यम आर्य समाज ही करता रहा है। शहर-शहर, जिले-जिले, कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण आर्य समाज की स्थापना हो गई। स्वामी जी राष्ट्रभाषा हिंदी के भी प्रवर्तक हैं और आर्य समाज के प्रचार की तो भाषा ही यही रही है।

नवीन विचारों के इस युग में देश की महिलाओं, पतितों व ब्राह्मणेतर जातियों के अधिकार के लिए महर्षि दयानंद तथा आर्य समाज से बढ़कर किसी भी अन्य समाज ने कार्य नहीं किया।

शिक्षण के लिए गुरुकुल जैसी संस्था निर्मित हो गई। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा। हमें ऋषियों की संतान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व करते हैं, तो कहना होगा कि ऋषि दयानंद से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञानराशि वेदों से परिचित कर दिया।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

एंटोनियो गुटेरस | महासचिव, संयुक्त राष्ट्र

बढ़ते जहरीले भाषणों, अतिवाद और मानवाधिकारों के हनन के कारण हम दुनिया भर में समुदायों को विभाजित होते देख रहे हैं। यह नेताओं की जिम्मेदारी है, वे सुनिश्चित करें कि लोग विविधता को एक ताकत के रूप में स्वीकारें।

हिन्दुस्तान | 75 साल पहले 12 फरवरी, 1949

पंचायती राज

हमारे देश में शहर थोड़े हैं और देहात अधिक। शहरों के लोग म्युनिसिपैलिटियों द्वारा स्वराज्य तथा स्वशासन का उपभोग करते हैं, किंतु देहातों के लोगों को स्वराज्य का सुख गांव पंचायतों द्वारा ही मिल सकता है। गांव पंचायतों की संस्था इस देश में अति प्राचीन काल से प्रचलित रही है। बड़े-बड़े राज्यों की स्थापना के बावजूद उनका अस्तित्व नहीं मिटा। गांव पंचायतों के माध्यम द्वारा लोकतन्त्र इस देश में जीवित रहा है। अवश्य ही समय के प्रवाह ने पंचायतों के स्वरूप को बिगाड़ दिया। बहुत जगह वे नाम शेष भी हो गईं। किंतु इस देश में यदि लोकतन्त्र का ठीक से विकास होना है तो हमको अपनी पंचायत-प्रथा को पुनर्जीवित करना होगा। असली लोकतन्त्र सत्ता के केन्द्रीकरण में नहीं, विकेन्द्रीकरण में निहित है और गांव पंचायतें विकेन्द्रित सत्ता की वाहन हो सकती हैं। आजादी मिलने के बाद देश के विभिन्न प्रांतों में पंचायतों का पुनर्गठन हो रहा है, यह सचमुच सन्तोष का विषय है।

युक्त प्रांत में पंचायत कानून बन चुका है। उसके अनुसार युक्त प्रांत में ३५,००० गांव पंचायतें बनने जा रही हैं। यों युक्त प्रांत में देहातों की संख्या एक लाख से कुछ अधिक है, किंतु पंचायतों के संगठन के लिए कुछ छोटे गांवों को बड़े गांवों के साथ संबद्ध कर दिया गया है। इन गांव पंचायतों के चुनाव प्रारम्भ हो गये हैं जो इस महीने के अन्त तक समाप्त होंगे और उनमें २१ वर्ष या इससे अधिक उम्र के २,७२,००,००० स्त्री-पुरुषों के भाग लेने की आशा की जाती है। युक्त प्रांत के गांव पंचायत कानून ने पंचायतों को स्थानीय शासन और न्याय के क्षेत्र में व्यापक अधिकार प्रदान किये हैं, किंतु उनकी सफलता मुख्यतः इस पर निर्भर करेगी कि जो पंच चुने जाते हैं, वे कितने निष्पक्ष, ईमानदार और स्वार्थरहित होते हैं। अतः युक्त प्रांत के देहाती भाई-बहनों को अपना चुनाव करने में काफी समझदारी और सोच-विचार से काम लेना चाहिए।

युक्त प्रांत में पंचायतों को जो काम करने होंगे, उनकी सूची काफी लम्बी-चौड़ी है। उदाहरण के लिए वे सार्वजनिक सड़कों के निर्माण, मरम्मत और उन पर रोशनी का प्रबन्ध करेंगी; चिकित्सा, सफाई और संक्रामक रोगों की रोकथाम आदि के उपाय करेंगी; इमारतों की देखभाल करेंगी; गांवों में जन्म-मरण का हिसाब रखेंगी; ...पशु गणना करेंगी और बच्चों की भलाई के काम करेंगी।

साफ पानी पहुंचाने की अच्छी पहल

जल जीवन मिशन एक ऐसी पहल है, जो हमारे देश को स्वच्छता, स्वास्थ्य और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ा रही है। इस मिशन के माध्यम से हमारी सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में जल संसाधनों के विकास को गति दी है, और आम जनता तक शुद्ध एवं सुरक्षित जल की पहुंच सुनिश्चित की है। यह मिशन सिर्फ नल से जल पहुंचाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण समुदायों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का भी संकेत है। जल जीवन मिशन के तहत ग्रामीण आबादी को पंप संचालन और जल प्रबंधन से संबंधित कार्यों में भी कुशल बनाया जा रहा है। इस मिशन ने ग्रामीण समुदायों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का काम किया है, साथ ही समाज को आत्मनिर्भर बनाने में भी इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जल जीवन मिशन का प्रभाव केवल जल की उपलब्धता तक नहीं है। इसमें स्वास्थ्य जोखिमों को कम करने की दिशा में भी पर्याप्त काम किया गया है। जल जीवन मिशन ने ऐसे नए समीकरण बनाए हैं, जो समृद्ध भविष्य की दिशा में हमें नई राह दिखा रहे हैं। इससे एक ऐसे भारत बनाने का लक्ष्य साकार होता दिख रहा है, जिसमें हरेक नागरिक की स्वच्छ जल तक पहुंच हो, कहीं भी पानी की कमी न हो और किसी भी परिवार को जीवन के इस अमृत के लिए मशक्कत न करनी पड़े। हालांकि, इसके लिए हमें कुछ अतिरिक्त प्रयास भी करने होंगे, जैसे समाज का हर वर्ग इसे अपना सहयोग दे। हमें जल संवर्द्धन के प्रति अधिक जागरूकता और संवेदनशीलता फैलानी होगी। ऐसे-ऐसे नवाचारी तरीके भी ढूंढ़ने होंगे, जिनसे जल संसाधनों को बेहतर तरीके से प्रबंधित किया जा सके।

साफ है, जल जीवन मिशन के माध्यम से समाज को स्वच्छ और सुरक्षित जल की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए सभी को अपना सहयोग देना होगा और इसमें अपनी सहभागिता निभानी होगी। यह योजना हमारे देश के लिए न केवल एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर और समृद्ध भविष्य की गारंटी भी होगी। इस मिशन ने हमें यह दिखाया है कि एक साथ मिलकर हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं और सफलता की ऊंचाइयों को छू सकते हैं। उम्मीद है, इस मिशन की चुनौतियों का भी हम सब मिलकर सामना करेंगे, और उनको दूर करके हर भारतीय तक स्वच्छ जल पहुंचाने की मुहिम को सफल बनाएंगे। अभी हमें इसके महत्व का आकलन करके जरूरी कदम उठाने होंगे।

अवनीश कुमार गुप्ता, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

जल जीवन मिशन

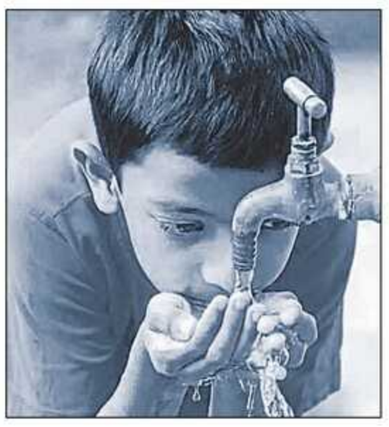

पहले जल-स्रोतों पर तो ध्यान दीजिए

उस दौर को बीते अभी ज्यादा समय नहीं हुआ है, जब हम खुलेआम किसी भी हैंडपंप या जल-स्रोत से पानी पी लिया करते थे। इससे हमारी प्यास भी खूब मिटती थी। मगर बाद में जीवाणु-विषाणु या आर्सेनिक का ऐसा खेल चला कि सब कुछ खत्म हो गया। तालाब और कुएं तो लुप्त हुए ही, हैंडपंप भी अब बमुश्किल ही दिखते हैं। खासकर शहरों में। इसका नतीजा क्या निकला? भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता कम होने लगी। वर्ष 2001 में सालाना प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता औसतन 1,816 घन मीटर थी, जो 2011 में घटकर 1,545 घन मीटर हो गई। साल 2021 में तो यह उपलब्धता और घटकर अनुमानित 1,486 घन मीटर रह गई। साल 2031 में इस आंकड़े के लुढ़कने व 1,367 घन मीटर तक पहुंच जाने का अनुमान लगाया गया है। कहा जा सकता है कि चूंकि इन वर्षों में जनसंख्या में भी बढ़ोतरी हुई है, इसलिए प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता में गिरावट आई है, लेकिन इसी बात को प्रमुख वजह मानने के बजाय क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हमने अपने प्राकृतिक जल-स्रोतों के साथ कितना खिलवाड़ किया है?

पहले स्वच्छ जल की कमी इसलिए भी नहीं होती थी, क्योंकि नदी, तालाब, झील, पोखर, कुएं जैसे सभी प्राकृतिक जल-स्रोत आस-पास होते थे। इससे भूजल की उपलब्धता बनी रहती थी और स्वच्छ जल की कहीं कोई दिक्कत नहीं होती थी। मगर बाद में ताल-तलैयों के प्रति सरकारी और सामाजिक उदासीनता एवं भूजल जैसे प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने स्वच्छ जल का गंभीर संकट हमारे सामने खड़ा कर दिया। रही-सही कसर आर्सेनिक जैसे तत्वों और पानी में मौजूद भारी धातुओं ने पूरी कर दी, जिसके कारण हैंडपंपों से साफ पानी निकलना बंद हो गया। लोग बोतलबंद पानी खरीदने को मजबूर होने लगे। पहले यह संकट शहरों में ही देखा जाता था, पर अब देश के गांव भी इससे जूझ रहे हैं। वहां भी पीने का साफ पानी आसानी से नहीं मिलता। आंकड़े तो यह भी हैं कि देश के करीब साढ़े सात करोड़ लोगों को मानक के अनुरूप पीने का पानी उपलब्ध नहीं है। यह संख्या आने वाले दिनों में और बढ़ेगी ही।

कहने के लिए सरकार भले ही हर घर में नल लगवा दे, लेकिन जब तक जल-स्रोतों को ठीक नहीं किया जाएगा, तब तक किसी योजना का कोई मतलब नहीं है। यही कारण है कि नल लगे कई घरों में पानी नहीं आने की शिकायत लोग करते रहते हैं। अगर हमें सबको स्वच्छ जल पिलाना है, तो प्राकृतिक जल-स्रोतों पर पहले ध्यान देना होगा।

अमृतेश, टिप्पणीकार

आप जानते हैं क्या है बेहतर

आपने अपने जीवन में ऐसा बहुत कुछ किया होगा, जिसकी आपने अपने लिए कल्पना भी नहीं की होगी। कितनी ही ऐसी कमजोरियों को खुद से दूर किया होगा, जिस पर आज आपको गर्व होता है। और इसी प्रक्रिया में यह समझ आता है कि जो समय आज है, वह हमेशा वैसा नहीं रहेगा।

आप कुछ भी कर सकते हैं, लेकिन सब कुछ नहीं कर सकते। -डेविड एलन

खूबसूरत जिंदगी

लेखिका, सामाजिक कार्यकर्ता, योगा प्रशिक्षक व ब्लॉगर। तन-मन और भाव के स्तर पर सुधार के जरिये बेहतरी पर जोर

ब्रियाना थॉम्पसन

आमतौर पर हमारी धारणा यही होती है कि प्रत्येक काम को करने का सही और गलत तरीका होता है। परिवार, स्कूल और सामाजिक स्तर तक हर जगह किसी अन्य के काम करने के तरीके को मिसाल की तरह हमारे सामने पेश किया जाता है। हम भी अपने मन में सही और गलत की धारणा बना लेते हैं। मसलन, पढाई कहां तक करनी चाहिए, शादी की सही उम्र क्या है या बच्चे किस उम्र तक हो जाने चाहिए जैसे प्रश्नों के निश्चित उत्तर हैं, जिन्हें सभी स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन समय के साथ लोगों की सोच में भी बदलाव आ रहा है और वह मानने लगे हैं कि एक ही काम को करने के अलग-अलग बहुत सारे तरीके भी हो सकते हैं। इतना ही नहीं, यह भी है कि कोई नया रास्ता चुनने के बाद भी कहीं-न-कहीं एक अहसास रहता है कि उस काम को करने का सही तरीका शायद कुछ और है।

बेशक, कुछ नया करने से पहले हम पूरी रणनीति बनाते हैं, पर जीवन कभी एक ढर्रे पर नहीं चलता है। ऐसे मे क्या वास्तव में इतनी तैयारी की जरूरत होती है? मुझे औचक स्थितियों में ढलना नहीं आता था, इसलिए सब कुछ अपने नियंत्रण में रखना अच्छा लगता था। यानी कहीं जाने से पहले वहां के मौसम, माहौल, साथ जाने वाले लोगों, वापसी के समय आदि की पूरी जानकारी रखती थी। इस कारण बेचैन भी रहती थी।

दैनिक कार्यों की सूची

मैं तब तक चैन से नहीं बैठती थी, जब तक मैं अपने रोजमर्रा के सारे काम पूरे ना कर लूं। नौकरी करते समय भी मैंने दिन-रात एक करके मेहनत की और स्वयं को पूरी तरह अपने काम में झोंक दिया। लेकिन उस समय जी तोड़ काम करना ही जीवन जीने का सही तरीका लगता था।

मां के रूप में अनुभव

समय एक सा नहीं रहता। अब मैं अपने तरीके से जीवन जी सकती हूं। अपने बेटे को मैं एक अकेली मां के रूप में पाल रही हूं और सारा दिन उसके साथ रहती हूं। लेकिन इसके बावजूद मुझे लगता है कि मुझे अपने बेटे को और ज्यादा समय देना चाहिए।

बेहतर इनसान बनें

एक जागरूक इनसान के रूप में मैं जीवन का प्रत्येक अनुभव लेना चाहती हूं ताकि स्वयं को और ज्यादा बेहतर बना सकूं। दोस्तों के साथ घूमना, किताबें पढ़ना, समाज के लिए कुछ अच्छा करना, बागवानी और खाना पकाना ऐसे काम हैं, जो मुझे खुशी देते है, लेकिन ये सारे काम एक साथ कर पाना संभव नहीं है।

ये सच है कि बहुत से लोग बहुमुखी प्रतिभाओं के धनी होते हैं लेकिन आपके लिए क्या बेहतर है, इसका पता लगाना जरूरी है।

करें डर का सामना

मैंने अपने जीवन में बहुत कुछ ऐसा किया है, जिसकी मैं कल्पना भी नहीं का सकती थी। अकेले आगे बढ़ना, अपने बेटे को जन्म देना, बहुत से जहरीले रिश्तों को खत्म करना, नई नौकरी करना और अपनी कमजोरियों पर काबू पाना कुछ ऐसे काम हैं, जिन्हें करके मुझे खुद पर गर्व होता है। असल में, जीत डर का सामना करने के बाद ही हासिल होती है। बिना संघर्ष किए सफलता का पूरा रस नहीं मिलता। जैसे कि बिना अंधेरे के रोशनी नहीं होती, बिना वियोग के प्रेम का महत्व नहीं समझ आता या बिना पीड़ा के सुख की अनुभूति नहीं की जा सकती है। लेकिन, सिर्फ सही समय का इंतजार करते रहने से कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। आपका फैसला चाहे जो भी हो, लोग बिन मांगी राय देते ही हैं, लेकिन आप सभी को खुश नहीं रख सकते हैं इसलिए बेहतर यही होगा कि स्वयं पर ध्यान दिया जाए और जो सही लगे, उसी को पूरा किया जाए।

बदलाव के प्रति तैयारी

सभी के जीवन में उतार-चढ़ाव, बदलाव आते हैं। जो समय आज है, वो कल नहीं रहेगा, इसलिए बदलाव के प्रति स्वयं को तैयार रखना जरूरी है। पर, इसका अर्थ यह नहीं है कि आप आज अपने जीवन के बारे में कोई योजना ही न बनाएं। आपको योजना बनाने का पूरा अधिकार है, पर समय व परिस्थिति के हिसाब से अपनी योजना में बदलाव लाने का सयंम व कौशल भी चाहिए।

याद रखिए, आपसे बेहतर आपके जीवन के बारे में कोई अन्य निर्णय नहीं ले सकता। ये आप ही जानते हैं कि आप कैसा अनुभव करते हैं और किसी कार्य को कितने अच्छे तरीके से कर सकते हैं। दूसरों से सलाह लेने में बुराई नहीं, पर अंतिम निर्णय आपका होना चाहिए। कोई अन्य किस गति से आगे बढ़ रहा है, इस बात से विचलित होने का अर्थ नहीं, क्योंकि किन्हीं दो लोगों की स्थितियां एक जैसी नहीं होती हैं। सब कुछ अपने नियंत्रण में लेने की बजाय खुद पर भरोसा रखें और अपने हिसाब से आगे बढ़ें।

eclecticpurpose.com

खुद से इश्क नहीं आसां

इन दिनों हर कोई खुद से प्रेम करने पर जोर देता है। मानो खुद से प्रेम करते ही हमारी सब समस्याएं हल हो जाएंगी। पर दिक्कत है कि हम दूसरों के संग रह लेते हैं, अपने साथ नहीं रह पाते। दूसरों से प्रेम अगर आसान नहीं, तो खुद से प्रेम कर पाना हमारे लिए और कठिन होता है। क्यों? आइए जानें ...

'पहले, खुद से इश्क करना सीखो बरखुर्दार। आसान नहीं है खुद का होना' – इतना कहकर उन्होंने लड़के के कंधे से हाथ हटाया और वे दोनों आगे बढ़ गए। पर, मैं उन बुजुर्ग के कहे शब्दों में अटक गई। हमारी सारी दिक्कतें, शिकायतें तो दूसरों को समझने समझाने की होती हैं। जहां सब एक-दूसरे पर आत्ममुग्धता का ठप्पा लगाए रहते हैं, वहां खुद से इश्क क्या कोई अलग बात है? हर साल सेल्फ लव पर ढेरों किताबें आती हैं। गुड मॉर्निंग, गुड नाइट संदेशों में खुद से प्यार करने को कहती एक से एक सुंदर, जोरदार पंक्तियां हम एक दूसरे को भेज रहे हैं। फिर क्यों, खुद का होना इतना कठिन है?

लाइफ कोच व स्तंभकार जॉन एमोडियो कहते हैं, 'प्लूटो ने कभी कहा था कि हर व्यक्ति अपने भीतर एक लड़ाई लड़ रहा है, हमें सबके साथ उदारता से पेश आना चाहिए। यह सलाह हमें खुद पर भी लागू करनी चाहिए! कौन ऐसा है, जिसमें कमियां नहीं हैं या जिन्होंने धोखा और चुनौतियां नहीं देखी, अपनों को नहीं खोया। खुद को प्रेम किए बिना प्यार का कोई चक्र पूरा नहीं हो सकता।'

मुझसे बुरा न कोई

दो बातें हैं जो खुद से प्यार करना मुश्किल बना देती हैं। एक, हर समय दूसरों से तुलना। दूसरा, कमियों के लिए हर समय खुद को कोसते रहना। हालांकि, इसमें हमारे माहौल की भूमिका भी कम नहीं है। उपेक्षा, मारपीट व उलाहनों के साथ बड़े हुए बच्चों को अपने भीतर धंस चुके हीन भावों को छोड़ने में दिक्कत तो होती ही है। हर बढ़ते कदम पर शर्मिंदगी, संकोच और बीती गलतियों के कारण खुद को कमतर मानने का एहसास, आगे बढ़ने से पहले ही रोक लेता है। हम अपनी अच्छी बातों को ढंग से देख ही नहीं पाते। खुद से तमीज से पेश नहीं आते। जब तब स्वयं को मूर्ख, अयोग्य, बदसूरत बोलते रहते हैं, खुद को दूसरों की नजरों से देखने के आदी हो जाते हैं।

आत्ममुग्धता नहीं है खुद से प्यार करना

आत्म मोह यानी नार्सिसिज्म, इसे भी समझना जरूरी है। आत्ममुग्धता जहां दूसरों की जरूरत से बेपरवाह अपने स्वार्थ पर केंद्रित होती है। वहीं स्व-प्रेम , दूसरों को भी जगह देता है। आत्ममुग्धता में हम सच जाने बिना ही खुद पर मोहित रहते हैं। या फिर अपने स्वार्थ को देखते हुए दूसरों को खुश करने की कोशिश करते हैं। वहीं स्व प्रेम, दूसरों से जलन न रखते हुए खुद को स्वीकारता है, बेहतर होने की कोशिश करता है। आत्ममुग्धता जहां हमारे दायरे को छोटा करती है, वहीं खुद से प्रेम हमें विस्तार देता है। यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि अपनी सेहत, स्टाइल और सुविधाओं का ध्यान रखना खुदगर्जी नहीं है। पर, आध्यात्मिक व कॉरपोरेट गुरु स्वामी सुखबोधानंद इसे केवल इतना ही नहीं मानते। वे कहते हैं, 'स्व प्रेम, स्व करुणा में हम लगातार अपने भीतर की ओर जाते हैं। अपने जटिल मनोभावों को स्वीकारते हुए खुद को संभालने की कोशिश करते हैं। जितना हम भीतर से शांत होते हैं, उतना ही दूसरों को प्रेम और सहयोग दे पाते हैं।'

फटकार भी, पुचकार भी

खुद से प्यार करना क्यों कठिन है, इस पर मित्र सुहेल ने कमाल बात कही है। वह कहते हैं, 'हम बिना खुद को जानें खुद से प्यार करना चाहते हैं। खुद से इश्क के लिए खुद से बातें करनी पड़ती है। बातें इस तरह जैसे मां, सहलाती भी है, फटकारती भी है। इस डांट और पुचकार में ईमानदारी और संयम से संतुलन बनाना पड़ता है।'

धारा के साथ बहना आसान है। खुद से प्यार करना धारा के विपरीत तैरने का अभ्यास है। पर एक बार आ जाए तो पार लगने में भी देरी नहीं लगती। केवल मैं चाहे जो करूं, मेरी मर्जी कह देने से ही काम नहीं चलता।

पूनम जैन

दरवाजा खटखटाने का भी शुल्क!

कहानी

जिन घरों में मैं अखबार डालता हूं, उनमें से एक का मेलबॉक्स उस दिन पूरा भरा हुआ था। मैंने घर का दरवाजा खटखटाया। उस घर के मालिक, बुजुर्ग व्यक्ति ने दरवाजा खोला।

मैंने पूछा, 'सर, आपका मेलबॉक्स पूरा भरा है, क्या हुआ?'

उन्होंने जवाब दिया, 'ऐसा मैंने ही किया है। मैं चाहता हूं कि आप हर दिन मुझे अखबार दें... तो कृपया दरवाजा खटखटाएं या घंटी बजाएं और अखबार मुझे हाथ में दें।'

हैरत से मैंने पूछा, 'आप कहते हैं तो मैं ऐसा ही करूंगा, पर यह हम दोनों के लिए असुविधा व समय की बर्बादी नहीं होगी?'

उन्होंने कहा, 'सही है, पर मैं यही चाहता हूं। मैं दरवाजा खटखटाने के शुल्क के रूप में हर माह 500 रुपये दूंगा। अगर कभी ऐसा हो कि दरवाजा खटखटाने पर मेरी तरफ से कोई प्रतिक्रिया न मिले, तो कृपया पुलिस को फोन करें।'

यह सुनकर मैं चौंका और पूछा, 'क्यों सर?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'मेरी पत्नी का निधन हो गया है, मेरा बेटा विदेश में रहता है, और मैं यहां अकेला रहता हूं। कौन जाने, मेरा समय कब आएगा?' अब उनकी आंखें गीली हो चुकी थीं। फिर बोले, 'मैं अखबार नहीं पढ़ता, मैं दरवाजे की घंटी की आवाज सुनने के लिए अखबार लेता हूं। किसी परिचित चेहरे को देखने, कुछ बात करने और कुछ परस्पर आदान-प्रदान करने के इरादे से... यह मेरे बेटे का विदेशी फोन नंबर है, अगर मैं जवाब न दूं, तो मेरे बेटे को भी सूचित कर देना।'

कभी-कभी हम आश्चर्य करते हैं कि बुजुर्ग लोग सोशल मीडिया पर कितने संदेश भेजते हैं। दरअसल, सुबह-शाम के इन अभिवादनों का महत्व दरवाजे पर दस्तक देने या घंटी बजाने के अर्थ के समान ही है। यह एक-दूसरे की सुरक्षा की कामना करने और देखभाल व्यक्त करने का एक तरीका है।

रघुकुल रीत सदा चली आई।
प्राण जाई, पर वचन न जाई।
-तुलसीदास

आपका वादा उन शब्दों से कहीं अधिक मायने रखता है, जिनका उपयोग आप इसे देने के लिए करते हैं। -रॉन कॉफमैन, शिक्षाविद्

वादा

वादा पूनम के चांद सरीखा होता है, अगर एक बार उन्हें पूरा ना किया जाए तो दिन-ब-दिन वह गायब होता चला जाता है। -जर्मन कहावत

कोई भी वादा उतना ही मजबूत होता है, जितना मजबूत उस वादे को करने वाला व्यक्ति होता है।
-स्टीव मारबोलिक, लेखक

वचन का पालन करने वाला कंजूस की भांति तोल-तोल कर अपने मुख से शब्द निकालता है।
-महात्मा गांधी, नवजीवन

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। किसी मित्र से कारोबार का प्रस्ताव मिल सकता है। परिवार का साथ मिलेगा।

वृष : आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। धार्मिक संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। कारोबार में वृद्धि होगी। परिश्रम अधिक रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन : आत्मविश्वास में कमी हो सकती है। नौकरी में स्थान परिवर्तन के योग बन रहे हैं। आय में वृद्धि होगी। रहन-सहन बिगड़ सकता है। सेहत का ध्यान रखें।

कर्क : आत्मसंयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के मौके मिलेंगे। आय बढ़ेगी। जीवन सुखमय रहेगा।

सिंह : मन प्रसन्न तो रहेगा। फिर भी संयत रहें। पठन-पाठन में रुचि रहेगी। बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ सकती है। सेहत का ध्यान रखें। शैक्षिक कार्यों में सफलता।

कन्या : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के मौके मिलेंगे। नौकरी में तरक्की के अवसर मिलेंगे। आय में वृद्धि होगी। पर, स्थान परिवर्तन के योग हैं।

तुला : आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। भवन सुख में वृद्धि होगी। कारोबार में विस्तार के लिए निवेश कर सकते हैं। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के मौके मिलेंगे।

वृश्चिक : कारोबारी कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। परिश्रम अधिक रहेगा। किसी मित्र का सहयोग मिल सकता है। परिवार में सुख-शांति रहेगी। आय वृद्धि भी होगी।

धनु : आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। किसी मित्र के सहयोग से आय में वृद्धि के योग। पिता से धन का सहयोग मिलेगा।

मकर : वाणी में मधुरता रहेगी। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। माता-पिता का सान्निध्य मिलेगा। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। अफसरों का सहयोग मिलेगा।

कुंभ : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। मन में शांति व प्रसन्नता रहेगी। नौकरी में परिवर्तन के योग बन रहे हैं। परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान पर जाने का योग।

मीन : मन अशांत रहेगा। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। यात्रा सुखद रहेगी। संतान की सेहत का ध्यान रखें। मित्रों का साथ मिलेगा।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषिकांत गोस्वामी

12 फरवरी, सोमवार, 23 माघ (सौर) शक संवत् 1945, 30 माघ मास प्रविष्टे 2080 (पंजाब पंचांग), 01 शब्बान सन् 1445, माघ शुक्ल तृतीया (विक्रमी संवत्) सायं 05.45 बजे तक। पूर्व भाद्रपद नक्षत्र दोपहर 02.57 बजे तक पश्चात उत्तर भाद्रपद नक्षत्र, सिद्ध योग रात्रि 02.37 बजे तक। तैतिल करण, चंद्रमा कुंभ राशि में प्रातः 09.36 बजे तक उपरांत मीन राशि में। सूर्य उत्तरायण। सूर्य दक्षिण गोल। शरद् ऋतु। प्रातः 07.30 बजे से प्रातः 09 बजे तक राहुकालम्। पंचक विचार। भद्रा रात्रि 04.14 मिनट से। गौरी तृतीया व्रत। कुंद चतुर्थी।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

घर बहुत अच्छा बना हुआ है, फिर भी वहां रहने में आनंद नहीं आ रहा है। क्या उपाय करना चाहिए? करुणा, झांसी

घर में आनंद के लिए पूर्वी ईशान बहुत महत्वपूर्ण होता है। पूर्वी ईशान अगर वास्तु सम्मत हो तो यह हमें मानसिक शांति के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करता है।

- जब महसूस हो कि जीवन में उदासीनता है तो इस दिशा का वास्तु जांच लें। इस दिशा से घर में प्रवेश करने वाली नैसर्गिक शक्तियां शुभ विचारों का संचार करती हैं।
- यहां पर लाल, नारंगी, काला रंग नहीं हो, यहां पर रसोई शुभ नहीं होती।
- कोई भी बड़ा या भारी निर्माण नहीं होना चाहिए।

वर्ग पहेली : 7511

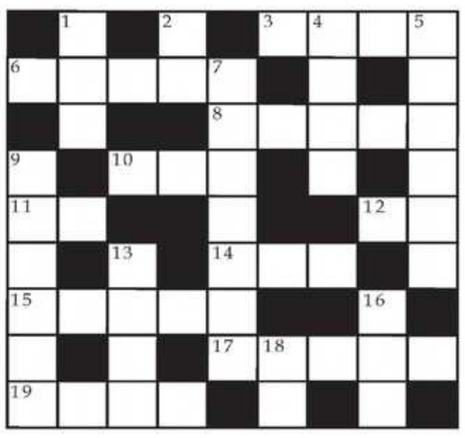

बाएं से दाएं
3. अरोचक; एकविध; एक जैसे रस वाला (4)
6. राज्य का प्रमुख; राज्यपाल; शासन प्रमुख (5)
8. मार्ग दिखाना; सही दिशा देना (2,3)
10. मद्यव्यसनी; शराब पीने वाला (3)
11. पहिया; चाक; भंवर; चक्कर (2)
12. कूटयुक्ति; चकमा; छल; भ्रम; विश्वासघात (2)
14. गरमी या परिश्रम के कारण शरीर से निकला पानी; स्वेद (3)
15. चारों झिल्लीदार पैरों वाला जीव; दिन में वृक्षों की डालों आदि में लटकने वाला जंतु जो रात के समय उड़ता है (5)
17. प्रसिद्ध; विख्यात (5)
19. सूंड; तुलसी (4)

ऊपर से नीचे
1. कालिख, कज्जल (3)
2. नागरमोथा; शहतूत का पेड़; सुपारी का वृक्ष (2)
4. कुछ लेने के लिए बच्चों की तरह हठ करना; लालायित होना; अड़ना (4)
5. ऊंची उड़ान भरवाना; कल्पनालोक में ले जाना; बड़े-बड़े ख्वाब दिखाना (3,3)
7. दुर्दशा में फंसना; विपत्ति पड़ना (3,1,3)
9. तंग करना; परेशान करवाना (2,4)
13. विकार उत्पन्न करना; खराब करना; बहकाना; पथभ्रष्ट करना; लत लगाना (4)
16. गीत; एक प्रकार का चलता गाना (3)
18. एक राशि; मछली (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविध विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 7510

1 प	थ	2 रा	ना	■	3 च	4 क	रा	5 ना
र्य	■	ख	■	6 च	■	लं	■	प
7 वे	दी	■	8 सं	प	र्क	क	र	ना
क्ष	■	9 पा	■	ल	■	ल	■	■
10 कं	त	र	न	■	11 मं	ग	वा	12 ना
■	■	क	■	13 से	■	ना	■	ज
14 ल	ह	र	मा	र	ना	■	15 ज्ञा	न
लि	■	वा	■	ल	■	16 दूध	■	ख
17 ता	रा	ना	थ	■	18 सि	र	फि	रा

सुडोकू : 7495

* आसान

	1					8		
	7		6				4	5
3				2	9			
		9	4		1		3	
		1		8		2		
	3		2		5	1		
			9	6				2
7	2				3		8	
		5					1	

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 7494

6	4	7	8	2	5	3	1	9
5	3	9	6	1	4	7	2	8
1	2	8	9	7	3	5	4	6
4	7	2	5	9	1	6	8	3
3	5	6	7	4	8	2	9	1
8	9	1	2	3	6	4	5	7
7	6	4	1	5	9	8	3	2
2	1	3	4	8	7	9	6	5
9	8	5	3	6	2	1	7	4

मैं एक समुदाय की प्रगति को उस डिग्री से मापता हूं, जो महिलाओं ने हासिल की है।
- डॉ. भीमराम आंबेडकर

17वीं लोकसभा इक्कीसवीं सदी के भारत की आधारशिला रखने वाले महत्वपूर्ण सुधारों की बुनियाद रखने वाली साबित हुई है। इस दौरान अनुच्छेद 370 हटना, नारी शक्ति वंदन (महिला आरक्षण) समेत कुल 221 विधेयक पारित हुए, जो भारत के संसदीय इतिहास में अविस्मरणीय है।

सुधारों का काल

बजट सत्र की समाप्ति के साथ ही कई बेहद महत्वपूर्ण सुधारों की जन्मदात्री सत्रहवीं लोकसभा का भी अंत हो गया है, जो सही मायनों में भारत के संसदीय इतिहास में अविस्मरणीय रहेगी। बजट सत्र के अंतिम दिन संसद में राम मंदिर निर्माण के धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसके पांच वर्ष के कार्यकाल को सुधार, कार्य करने और बदलाव लाने का काल बताया है, जो आंकड़ों में भी दिखता है। प्रधानमंत्री का यह कहना इसलिए अहम है, क्योंकि दो महीने बाद लोकसभा चुनाव है, जिसमें सरकार अपनी उपलब्धियों के साथ मैदान में उतरना चाहेगी। लेकिन सत्रहवीं लोकसभा अन्यथा भी कई मायनों में ऐतिहासिक रही। अनुच्छेद 370 का हटना, नारी शक्ति वंदन (महिला आरक्षण) अधिनियम पारित होना, तीन तलाक के खिलाफ कानून, अंग्रेजों के समय की दंड संहिता के स्थान पर न्याय संहिता लाना, डाटा संरक्षण और प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितताओं को रोकने संबंधी महत्वपूर्ण विधेयकों समेत कुल 221 विधेयक पारित हुए। 97 फीसदी उत्पादकता से काम किया गया, इस लिहाज से यह पिछली पांच लोकसभाओं में सबसे उत्पादक रही। लोकसभाध्यक्ष का यह कहना कि इस लोकसभा के पूरे कार्यकाल के दौरान विभिन्न स्रोतों से 875 करोड़ रुपये की बचत हुई, महत्वपूर्ण और अनुकरणीय है, क्योंकि यह लोकसभा सचिवालय के कुल बजट का 23 फीसदी है। जब भारत समेत पूरी दुनिया कोविड से जूझ रही थी, तब इसी लोकसभा के सांसदों ने अपनी सांसद निधि स्वेच्छा से छोड़कर और अपने वेतन में 30 फीसदी की कटौती स्वीकार कर मिसाल कायम की थी। आंकड़े यह भी बताते हैं कि सत्रहवीं लोकसभा अपेक्षाकृत युवा होने के साथ अधिक शिक्षित भी है। मौजूदा लोकसभा में सदस्यों की औसत आयु 54 वर्ष है और सदन के करीब 400 सदस्य स्नातक हैं। इस लोकसभा के 260 सदस्य ऐसे हैं, जो पहली बार चुनकर संसद पहुंचे। इस दौरान, जहां 140 करोड़ भारतीयों की

महत्वाकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करता नया संसद भवन और सेंगोल देश को मिला, वहीं संसद में सुरक्षा में चूक का एक मामला भी सामने आया, जब संसद पर आतंकी हमले की बरसी वाले दिन दो लोग लोकसभा में घुस आए थे। इस पर हुए हंगामे के दौरान चार दिनों की अवधि में सौ से ज्यादा सांसदों का निलंबन दुखद क्षण था। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में मुद्दों का गंभीर विश्लेषण करने वाली अर्थपूर्ण बहसों का कम होना जरूर चिंतित करता है, लेकिन उम्मीद है कि नई 18वीं लोकसभा इस पर जरूर ध्यान देगी।

For More Newspapers And Magazines Join Paid Group Whatsapp To 8969469464

इनकी बातें, इनका सच

महिला विरोधी सामाजिक मानसिकता की बर्बर मिसाल एक फिल्म हजार करोड़ किनके भरोसे कमा ले जाती है? जिनके सिर इसका जुनून चढ़कर बोल रहा है, वही अगले महिला दिवस पर महिलाओं के हक में बड़ी-बड़ी बातें करते दिखेंगे।

तसलीमा नसरीन
चर्चित लेखिका

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस में अभी कुछ देर है। लेकिन मैं महसूस कर रही हूं कि उसकी तैयारी शुरू हो चुकी है। महिला दिवस का पालन आजकल खूब धूमधाम से किया जाता है। सुबह-सुबह मुझे बहुत लोग, जिनमें महिलाएं और सामाजिक कार्यकर्ता ही ज्यादा होते हैं, फोन कर महिला दिवस की शुभकामनाएं देते हैं। यह मुझे थोड़ा अटपटा लगता है। अगर महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार मिलते, तो महिला दिवस का कोई औचित्य ही नहीं था। यहां तो हालत यह है कि एक दिन की गहमागहमी के बाद महिलाओं के लिए पूरा साल संघर्ष में ही बीतता है।

महिला-विरोधी सामाजिक मानसिकता का ताजा उदाहरण *एनिमल* नाम की फिल्म है, जो अब तक 900 करोड़ रुपये से भी अधिक का कारोबार कर चुकी है। बेहद लोकप्रिय यह फिल्म भयंकर नारी-विद्वेषी है। मैं सिर्फ भारत की बात नहीं कर रही। पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में अभी जहरीले मर्दवाद का प्रचलन है। महिला दिवस से ठीक पहले एक महिला-विद्वेषी फिल्म के प्रति समाज के जुनून को भला क्या कहेंगे? इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि आज *एनिमल* फिल्म का जुनून जिनके सिर चढ़कर बोल रहा है, कल वही महिला दिवस पर महिलाओं के हक में बड़ी-बड़ी बातें करेंगे!

सच तो यह है कि आजकल महिला दिवस को जोर-शोर से मनाया भी जाता है। पिछले साल इसी खास दिन जब मैं बैंक गई, तो देखा कि उसे रंग-बिरंगे गुब्बारों से सजाया गया है। अंदर जाने पर एक कर्मचारी ने मुझे गुलाब भेंट कर विश भी किया था। परचून की दुकान पर गई, तो वहां भी दुकानदार ने मुझे विश किया था। उस दिन बैंक और दुकान में मैं जब तक रही, मैंने देखा कि आनेवाली हर महिला का स्वागत किया जा रहा है। देश-विदेश घूम चुकने बावजूद मेरे लिए यह नया अनुभव था। इसका मतलब तो यही है कि साधारण आदमी भी अब महिला दिवस

के बारे में जानता है। उसे यह भी मालूम है कि इस दिन महिलाओं का सम्मान करना चाहिए। सवाल यह है कि महिलाओं के प्रति यह श्रद्धा भावना सिर्फ एक दिन के लिए सीमित क्यों है। ऐसा मैं जान-बूझकर ही कह रही हूं। अगर हमारा समाज सचमुच महिलाओं का सम्मान करता, उन्हें पुरुषों के बराबर समझता और महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठाता, तो अखबारों के पृष्ठ यौन अपराधों के वृत्तांतों से भरे हुए कतई न होते। फिर यह भी नहीं मान लेना चाहिए कि महिला दिवस के दिन महिलाओं के खिलाफ अपराध होता ही न होगा।

इसीलिए महिलाओं के हक की लड़ाई लड़ते हुए भी महिला दिवस मुझे बहुत आकर्षित नहीं करता। यह कुछ उन अनुष्ठानों की तरह है, जिनके औचित्य-अनौचित्य पर सवाल उठाए बिना हमें जिनका पालन करना पड़ता है। महिला दिवस का आयोजन मुझे स्कूलों में कक्षा शुरू होने से पहले गाए जानेवाले राष्ट्रगान की तरह लगता है, जिसमें छात्र खड़े होते हैं, तो सिर्फ इसलिए कि यह एक नियम है। स्कूलों में अनेक छात्र ऐसे होते हैं, जिनका राष्ट्रगान से कोई भावनात्मक लगाव नहीं होता। ठीक उसी तरह महिला दिवस के अनुष्ठान में मेरी कोई रुचि नहीं है, क्योंकि मैंने पाया है कि महिला दिवस का सालाना अनुष्ठान किसी भी देश में स्त्रियों की स्थिति बदलने में मददगार साबित नहीं हुआ है।

यह दिवस अब लगभग हर देश में मनाया जाता है। जब आम लोग महिला दिवस के महत्व और औचित्य को समझने लगे हैं, तब महिलाओं के साथ होनेवाले अपराधों में कमी क्यों नहीं होती? जब सामाजिक स्तर पर स्त्रियों के प्रति कोई उदार बदलाव नहीं है, कन्या भ्रूणहत्या से लेकर शिक्षा और रोजगार के मोर्चे पर महिलाओं के प्रति दुराव कायम है, तो भला यह क्यों न माना जाए कि उपभोक्तावादी आयोजनों-अनुष्ठानों में यह भी एक सालाना अनुष्ठान है? अगर महिलाओं के हित में सचमुच ही कुछ करना है, तो उसके लिए साल के तीन सौ पैंसठ दिन हैं। लेकिन चलन यह है कि एक दिन तो महिलाओं के हित में बड़ी-बड़ी बातें करो और पूरे साल महिला-विरोधी अभियान चलाए रहो।

अगर अपनी बात करूं, तो कहना पड़ता है कि नारी-विरोधी समाज में बैठकर मैं पिछले करीब चालीस साल से महिलाओं के हक में लिख रही हूं। इसके बावजूद कोई बड़ा और सार्थक बदलाव तो कहीं दिख नहीं रहा। फिर यह भी लगता है कि मैंने भला कितना बड़ा जोखिम उठाया। हजारों नारीवादियों ने हजारों साल से महिलाओं के लिए मुझसे कहीं ज्यादा बड़ा जोखिम उठाया है। उनकी लड़ाई के आगे मेरा अभियान तो बहुत ही छोटा है। चूंकि स्त्रियों को उनके अधिकार आज तक नहीं मिले हैं, जो पुरुषवर्चस्ववादी समाज में आसान नहीं हैं, इस कारण उनके लिए लड़ने वाली असंख्य महिलाओं की लड़ाई को भी मान्यता नहीं मिली है। महिलाओं को न्याय देने के विपरीत इन दिनों कई देशों में पुरुष संरक्षण समिति और पुरुषों को अधिकार दिलाने जैसे संगठन खड़े हो गए हैं। जहां इस तरह के कदम उठाए जा रहे हों, वहां महिलाओं को न्याय और अधिकार दिलाने का अभियान कितना पीछे चला गया होगा, इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

हालांकि इस चौतरफा हताशा के बीच कहीं-कहीं उम्मीद भरे दृश्य भी दिखाई पड़ते हैं। कुछ समय पहले मैंने काबुल की सड़कों पर कुछ पुरुषों को नीला बुर्का पहने और हाथ में बैनर लिए गुजरते देखा था। वे स्त्रियों पर होनेवाला अत्याचार खत्म करने के लिए अभियान चला रहे थे। मैं वह दृश्य देखकर मुग्ध थी। महिलाओं के हक में सड़कों पर निकलने वाले अन्य जुलूसों से वह जुलूस ज्यादा मर्मस्पर्शी और तार्किक था। हालांकि काबुल की सड़क पर उस दिन अफगान पुरुषों की संख्या पंद्रह-बीस से ज्यादा नहीं थी। जबकि मैं चाहती हूं कि यह संख्या बढ़े। मुझे पश्चिम के देशों की याद आई, जहां महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए महिलाओं के जूते पहनकर पुरुष सड़कों पर एक मील तक चले थे। उनकी मांग थी कि महिलाओं के खिलाफ यौन अपराध समेत जो तमाम अपराध पुरुष करते हैं, वे सब बंद हों। तुर्किये और भारत में भी महिलाओं के अधिकारों के लिए पुरुषों को सड़कों पर उतरते देखा गया है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर भी महिलाओं के प्रति सच्चा सम्मान दिखानेवालों की संख्या बढ़ रही है। जब तक महिलाओं के अधिकारों के लिए सड़कों पर अधिक से अधिक पुरुष नहीं उतरेंगे, तब तक महिलाओं के जीवन में वास्तविक बदलाव आना संभव नहीं है।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

जग्गी वासुदेव

मैं एक पहाड़ी पर चढ़ा, क्योंकि मेरे पास गंवाने के लिए समय था, पर मैंने सब गंवा दिया, वह सब, जो 'मैं' और मेरा था। अब मैं हूं, एक खाली घड़े के समान। अधीन हूं ईश्वरीय इच्छा और अनंत कौशल के।

जब मैंने अपनी सुध-बुध खो दी

__मैसूर__ शहर में एक चलन है। अगर आपके पास करने के लिए कुछ है, तो चामुंडी पहाड़ी पर जाइए। और अगर करने के लिए कुछ नहीं है, तो भी चामुंडी पहाड़ी पर जाइए। अगर आप किसी से प्यार करते हैं, तो चामुंडी पहाड़ी पर जाइए। और अगर प्यार में आपका दिल टूट गया है, फिर तो चामुंडी पहाड़ी पर जाना ही है। एक दोपहर मेरे पास करने को कुछ नहीं था और हाल ही में मेरा दिल भी टूटा था, इसलिए मैं चामुंडी पहाड़ी पर चला गया। करीब दो-तिहाई पहाड़ी चढ़ने के बाद एक चट्टान पर मैं बैठ गया। वह मेरी ध्यान-शिला थी। वह वहां काफी समय से थी। उस चट्टान पर बैंगनी बेर व बरगद के नाटे पेड़ ने अपनी मजबूत जड़ें जमाई हुई थीं। वहां से शहर का मनोरम दृश्य दिखाई देता था। उस क्षण तक मेरा जो अनुभव था, उसके अनुसार मेरा शरीर और मन दोनों 'मैं' थे और शेष विश्व 'बाहरी'। लेकिन अचानक मुझे भान नहीं रहा था कि मैं क्या था और क्या नहीं। मेरी आंखें अब भी खुली थीं। लेकिन मैं जिस हवा में सांस ले रहा था, जिस पत्थर पर मैं बैठा था, सब 'मैं' बन गया था। वहां जो कुछ था, सब मैं था। मैं सचेत होते हुए भी चेतन नहीं था। चीजों में फर्क कर पाने की इंद्रियों की प्रकृति खो चुकी थी। इस बारे में जितना ज्यादा कहूंगा, उतना ही ज्यादा पागलपन लगेगा, क्योंकि जो हो रहा था, वह अवर्णनीय था।

मेरा 'मैं' हर जगह व्याप्त था। हर चीज अपनी तय सीमाओं से परे विस्तार कर रही थी; हर चीज विस्तृत होकर दूसरी चीज में समा रही थी। यह संपूर्णता की आयाम रहित एकता थी। बस वही पल अब मेरा जीवन है, जो बहुत सुंदरता से बरकरार है। अब मैं हूं, एक खाली घड़े के समान। अधीन हूं ईश्वरीय इच्छा और अनंत कौशल के। जब मुझे होश आया, तो ऐसा लगा कि महज दस मिनट गुजरे हैं। पर मेरी घड़ी की सुइयां बता रही थीं कि शाम के साढ़े सात बज चुके थे, यानी साढ़े चार घंटे बीत चुके थे। मेरी आंखें खुली थीं, सूरज ढल चुका था और अंधेरा हो गया था। मैं पूरी तरह से सतर्क था, पर उस पल तक, जिसे मैं मेरा 'मैं' मानता था, वह गायब हो चुका था। मैं रोने-धोने वालों में से नहीं हूं। फिर भी, चामुंडी पहाड़ी की उस चट्टान पर पच्चीस साल की उम्र में मैं इतना उन्मत्त था कि मेरे आंसू बह रहे थे और मेरी कमीज गीली हो चुकी थी। अपने अस्तित्व के एक बिल्कुल अलग आयाम से मेरा विस्फोटक ढंग से सामना हुआ, जिसकी मुझे तनिक भी जानकारी नहीं थी। मैं उल्लास और आनंद की एक बिल्कुल नई अनुभूति से भीग चुका था, जिसका न तो मैंने कभी अनुभव किया था, न ही उसकी संभावना की कल्पना ही की थी। इस बारे में जब मैंने अपने संशयी दिमाग पर जोर डाला, तो मुझे इतना ही समझ आया कि शायद मैं अपना मानसिक संतुलन खो बैठा हूं! फिर भी, यह सब इतना खूबसूरत था कि मैं इसे गंवाना नहीं चाहता था। अलबत्ता, उस दोपहर को क्या हुआ था, उसे बताने में मैं कभी पूरी तरह समर्थ नहीं हो पाया। शायद उसे बयान करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि मैं ऊपर गया और फिर नीचे नहीं आया। मैं फिर कभी नीचे आया ही नहीं।

'मैं' को खोना...

सूत्र

हर समस्या का समाधान इंसान के हाथों में है। अगर इंसान अपनी खुशी के रास्ते में खुद रुकावट बनना बंद कर दे, तो हर दूसरा समाधान मौजूद है। मनुष्य को रूपांतरित किए बिना आप दुनिया को रूपांतरित नहीं कर सकते। अपने मैं को खोने का आनंद ही कुछ अलग होता है। आपकी खुशी, आपका क्लेश, आपका प्रेम, आपकी यंत्रणा, आपका आनंद, सब आपके ही हाथों में है।

दूसरा पहलू

शिकार के मकसद से ही केवलादेव नेशनल पार्क बनाया गया था, जहां आज पक्षी बेखटके विचरण करते हैं।

कभी गरजती थीं बंदूकें अब पक्षियों का है बसेरा

भूपेंद्र कुमार

आप बस शांति से बैठ जाइए। प्रकृति से आत्मसात हो जाइए और परिंदे निःसंकोच आपके आसपास आने लगेंगे। भरतपुर के केवलादेव नेशनल पार्क की कहानी भी अजीब है। क्या आप यकीन करेंगे कि इस अभयारण्य को बनाया ही शिकार करने के मकसद से गया था? यह जंगली जानवरों और पक्षियों का प्राकृतिक आवास नहीं था। यहां शिव का प्राचीन मंदिर है, जो श्री केवलादेव के नाम से विख्यात है, इसी के नाम से पार्क को जाना जाता है। यहां पक्षियों की 370, मछलियों की 43, कछुओं की 10, सांपों की 13 और वन्य जीवों की कई प्रजातियां मौजूद हैं।

इसी मंदिर से जुड़ी विशाल झील है, जिसमें हजारों पक्षी जाड़े की धूप में अठखेलियां करते नजर आते हैं। सुदूर चीन, साइबेरिया, यूरोप से आने वाले इन पक्षियों को यहां पर्याप्त मात्रा में भोजन और सुरक्षा मिलती है। आज जिस तरह यहां पक्षी बेखटके विचरण करते हैं, पहले संभव नहीं था। दिन भर नामवर हस्तियों की बंदूकें गरजती रहती थीं। लगभग 250 साल पहले 1763 ईस्वी में भरतपुर के तत्कालीन राजा ने बाणगंगा और गंभीर नदी पर बांध बनाकर इस इलाके को दलदली भूमि में तब्दील किया। वर्ष 1899 में इस इलाके को आम लोगों के लिए बंद कर दिया गया। गुजरात की मोरवी स्टेट के राजकुमार हरभानजी को भरतपुर के राजा ने इस इलाके को जल मुर्गियों का शिकारगाह बनाने का काम सौंपा।

वर्ष 1902 में औपचारिक रूप से भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने इस शिकारगाह का उद्घाटन किया। दो दिसंबर, 1902 को बड़ी संख्या में बत्तख और मुर्गियों का शिकार कर उन्होंने इसका जश्न मनाया। फिर आया 1938 का वह दिन, जो सिहरन पैदा कर देता है। तत्कालीन वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने 12 नवंबर को एक ही दिन में 4,273 जलीय पक्षियों का शिकार कर कीर्तिमान बनाया, जो आज भी मंदिर के पास की दीवार पर अंकित है। देश आजाद हुआ और 1956 में केवलादेव घना को पक्षी विहार अधिसूचित किया गया, लेकिन दिलचस्प बात यह कि भरतपुर के महाराजा और उनके अतिथियों को वर्ष 1965 तक शिकार की इजाजत दी जाती रही। वर्ष 1965 में यहां अंतिम बार तेंदुए का शिकार किया गया था। वर्ष 1967 में इसे रिजर्व फारेस्ट घोषित कर दिया गया तथा शिकार पर पूरी तरह पाबंदी लग गई। वर्ष 1985 में इसे वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया गया। लेकिन समस्याएं अब भी हैं, पार्क को पानी मिलने में दिक्कत आती है। कभी चंबल, तो कभी यमुना से इसका समाधान किया जाता है। फिर भी पक्षियों से रू-ब-रू होने की यह अनोखी जगह है।

वर्ष1902 में औपचारिक रूप से भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने इस शिकारगाह का उद्घाटन किया, और कुछ खास लोगों को वर्ष 1965 तक शिकार की इजाजत दी जाती रही।

वर्ष 1967 में इसे रिजर्व फारेस्ट घोषित कर दिया गया तथा शिकार पर पूरी तरह पाबंदी लग गई। वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित होने के बावजूद यहां पानी की समस्या अब भी है।

आंकड़े

रेल मार्गों का विद्युतीकरण

पिछले कुछ वर्षों में रेल मार्गों के विद्युतीकरण में बहुत तेजी आई है और दिसंबर, 2023 तक नब्बे फीसदी से अधिक विद्युतीकरण कार्य हो चुका है।

2023-24	93.8%
2022-23	85.4%
2021-22	80.2%
2020-21	70.4%
1948-2014	33.5%

2023-24 के आंकड़े दिसंबर, 2023 तक के हैं।

स्रोत : भारतीय रेल

वही व्यक्ति दुखी होता है, जिसकी आवश्यकताएं ज्यादा होती हैं। जिसे उपलब्ध साधनों से ही संतोष हो जाता है, उसे भला किस बात का दुख!

सुख का रहस्य

अंतर्यात्रा
शिवकुमार गोयल

सुविख्यात दार्शनिक रसेल जब धर्मग्रंथों का अध्ययन करते, तो उन्हें लगता कि संसार में सच्ची सुख-शांति प्राप्त करना एक प्रकार से असंभव ही है। वह स्वयं तमाम भौतिक सुख-सुविधाएं उपलब्ध होने के बावजूद सुख की अनुभूति नहीं कर पाते थे। यह उनकी बेचैनी और चिंता का प्रमुख कारण बन गया था।

एक दिन रसेल मन बहलाने के लिए बाग में गए। उन्होंने देखा कि माली थॉमस पौधे रोपता-रोपता मस्ती में गीत गा रहा है। पास में उसने अनाज के दाने रखे हुए थे, जिन्हें वह आसपास चहचहा रही चिड़ियों के सामने डालकर खुशी से नाचने लगता था। रसेल ने उस माली से पूछा, 'तुम आज बहुत खुश नजर आ रहे हो? क्या हमेशा ऐसे ही प्रसन्न रहते हो या आज कुछ खास बात है?'

माली ने जवाब दिया, 'साहब, इस सुंदर प्रकृति का भरपूर आनंद लेने तथा जितना वेतन मिलता है, उतने में ही काम चलाकर पूर्ण संतोष रखने के कारण दुख और उदासी मेरे पास फटकने भी नहीं पाती। वही व्यक्ति दुखी होता है, जिसकी आवश्यकताएं ज्यादा होती हैं। जिसे उपलब्ध साधनों से ही संतोष हो जाता है, उसे भला किस बात का दुख!'

दार्शनिक रसेल माली के मुख से सुखी रहने का रहस्य सुनकर हतप्रभ रह गए।

(अमर उजाला आर्काइव से)

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 26 जनवरी, 1990

अस्पताल में पुलिस सहायता केंद्र का उद्घाटन

पुलिस सहायता केन्द्र का उद्घाटन

भिण्ड (म.प्र.), 25 जनवरी।

भिंड के जिला चिकित्सालय परिसर में पुलिस सहायता केंद्र चौकी का उद्घाटन करते हुए चंबल रेंज के डीआईजी ने कहा कि पिछले दिनों अस्पताल में घटी घटनाओं के कारण इस चौकी की स्थापना की गई, जिससे सुरक्षा की भावना उत्पन्न होगी।

बहुआयामी गरीबी में कमी

गरीबों के लिए रोजगार के मौके जुटाने की खातिर डिजिटल शिक्षा की कमियों को दूर करने के साथ उन्हें नए कौशलों में प्रशिक्षित करने की जरूरत है।

जयंतीलाल भंडारी | **योजना**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में राज्यसभा में कहा कि पिछले नौ वर्षों में देश में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। लोगों को गरीबी से बाहर लाने में 80 करोड़ लोगों को दिए जा रहे निःशुल्क खाद्यान्न और अन्य कल्याणकारी योजनाओं की अहम भूमिका है। इससे पहले नीति आयोग की तरफ से भी वैश्विक मान्यता के मापदंडों पर आधारित बहुआयामी गरीबी इंडेक्स (एमपीआई) दस्तावेज जारी किया गया था।

बहुआयामी गरीबी इंडेक्स निकालने के लिए बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं वित्तीय समावेशन जैसी सुविधाओं पर आधारित 12 विभिन्न मानकों-पोषक तत्व, बच्चे की मृत्यु दर, माताओं के स्वास्थ्य, बच्चों के स्कूल जाने की उम्र, स्कूल में उनकी उपस्थिति, रसोई, ईंधन, स्वच्छता, पेयजल, बिजली, आवास, संपदा व बैंक खातों को शामिल किया जाता है। इसके अनुसार, पिछले नौ वर्षों में भारत में करीब 25 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आ गए हैं। लेकिन अब भी

देश में करीब 15 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी का सामना कर रहे हैं। इस दस्तावेज के मुताबिक, सरकार की विभिन्न लोक कल्याणकारी योजनाओं की इसमें अहम भूमिका रही है।

यह भी महत्वपूर्ण है कि नीति आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक, उत्तर प्रदेश में पिछले नौ वर्षों में 5.94 करोड़, बिहार में 3.77 करोड़, मध्य प्रदेश में 2.30 करोड़, तो राजस्थान में 1.87 करोड़ लोग एमपीआई मानकों के हिसाब से गरीबी से मुक्त हुए है। इस हिसाब से अब करीब 15 करोड़ लोग एमपीआई मानक से जुड़ी सुविधाओं से वंचित रह गए हैं। ऐसे लोगों की संख्या बिहार में सबसे ज्यादा 26.59 फीसदी, झारखंड में 23.34 फीसदी, उत्तर प्रदेश में 17.40 फीसदी, छत्तीसगढ़ में 11.71 फीसदी, राजस्थान में 10.77 फीसदी, तेलंगाना में 3.76 फीसदी, हिमाचल में 1.88 फीसदी, तमिलनाडु में 1.48 फीसदी, केरल में 0.48 फीसदी है। सरकार ने 2030 तक देश के ऐसे सभी नागरिकों को बहुआयामी गरीबी से बाहर करने का लक्ष्य रखा है।

इसी तरह विगत छह नवंबर को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में गरीबी 2015-2016 के मुकाबले 2019-2021 के दौरान 25 फीसदी से घटकर 15 फीसदी पर आ गई है। विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) सहित दुनिया के विभिन्न सामाजिक सुरक्षा संगठनों द्वारा बहुआयामी गरीबी घटाने में भारत की खाद्य सुरक्षा की जोरदार सराहना की गई है। आईएमएफ द्वारा प्रकाशित शोध पत्र में कहा गया है कि सरकार द्वारा चलाई गई प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत मुफ्त खाद्यान्न कार्यक्रम ने कोविड-19 के कारण लगाए गए लॉकडाउन के प्रभावों की गरीबों पर मार को कम करने में अहम भूमिका निभाई है और इससे अत्यधिक गरीबी में भी कमी आई है।

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किए गए अंतरिम बजट में बहुआयामी गरीबी के दायरे से देश की सभी जनता को पूरी तरह से मुक्त करने के पक्के इरादों और प्रयासों की कवायद स्पष्ट रूप से दिखाई दी है। इस नए अंतरिम बजट में वित्तमंत्री ने चालू वित्त वर्ष 2023-24 के तहत बहुआयामी गरीबी के दायरे से बाहर निकालने वाले विभिन्न मदों पर किए गए वित्तीय आवंटन की तुलना में औसतन 10 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी की है।

भारत को अब भी निम्न आय वाला देश माना जाता है। विभिन्न वर्गों की प्रति व्यक्ति आय में संतुलित वृद्धि से अधिक लोग गरीबी के दायरे से बाहर आएंगे और उनका जीवन बेहतर होगा। इसके साथ-साथ बहुआयामी गरीबी का सामना कर रहे परिवारों के युवाओं को कौशल प्रशिक्षण और डिजिटल कौशल से सुसज्जित करके रोजगार के जरिये सशक्तीकरण का अभियान सुनिश्चित करना होगा। इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि विकास की प्रक्रिया और गरीबी उन्मूलन में देश के कुछ प्रदेश बहुत पीछे छूट गए हैं। इन राज्यों के समावेशी विकास पर विशेष ध्यान देना होगा। चूंकि कोविड-19 के बाद बहुआयामी गरीबी को दूर करने के लिए इस वर्ग के युवाओं में डिजिटल शिक्षा की जरूरत बढ़ गई है और इसकी अहमियत रोजगार में भी बढ़ गई है। ऐसे में, गरीब एवं कमजोर वर्ग के युवाओं के लिए रोजगार के मौके जुटाने के लिए एक ओर सरकार को डिजिटल शिक्षा के रास्ते में दिखाई दे रही कमियों को दूर करना होगा, वहीं दूसरी ओर, उन्हें कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से नए हुनर सिखाए जाने की जरूरत होगी।

सभी राष्ट्रीय हिन्दी और अंग्रेजी अखबारों
तथा अपने जिले के अखबारों एवं सभी प्रकार के मैगजीन के लिए आप हमारे Paid ग्रुप से जुड़े।
अधिक जानकारी के लिए 8969469464 पर व्हाट्सएप करें।

श्वेत पत्र

संप्रग की असलियत

केन्द्र सरकार द्वारा पेश श्वेत पत्र संप्रग सरकार के आर्थिक कुप्रबंधन के कारण उसके शासन को 'खोया दशक' बताता है। मोदी सरकार ने अपने वादे के अनुसार संप्रग सरकार युग में व्याप्त राजकोषीय कुप्रबंधन पर एक श्वेत पत्र पेश किया है। इसमें अनेक नीतिगत कमियों की ओर संकेत किया गया है जिनमें आर्थिक अव्यावहारिकता, लाल-फीताशाही, आर्थिक सुधारों में सुस्ती, आदि शामिल हैं। इनके कारण आर्थिक वृद्धि धीमी पड़ी तथा अनेक ढांचागत चुनौतियां बनी रहीं। आंकड़ों के विश्लेषण तथा ऐतिहासिक तुलनाओं के आधार पर श्वेत पत्र ने संप्रग सरकार के शासनकाल में ठहराव तथा वर्तमान सरकार में तेज गति को रेखांकित किया गया है। वास्तव में वर्तमान सरकार ने अनेक मामलों में शानदार प्रदर्शन किया है। मोदी सरकार की आर्थिक उपलब्धियों में महत्वपूर्ण सुधार, जैसे जीएसटी का क्रियान्वयन, 'बिजनेस सुगमता' में सुधार की पहल तथा वित्तीय समावेशन के कार्यक्रम 'जनधन योजना' व 'प्रधानमंत्री मुद्रा योजना', आदि शामिल हैं। 'भारतमाला' और 'सागरमाला' जैसी ढांचागत परियोजनायें तथा 'डिजिटल इंडिया' जैसी पहलों का उद्देश्य देश का आधुनिकीकरण तथा उसमें संपर्क बढ़ाना है। विदेशी निवेश आकर्षित करने, स्टार्टअप को प्रोत्साहन देने तथा पीएमएवाई व पीएमकेएसवाई जैसी योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण विकास पर महत्वपूर्ण ढंग से ध्यान दिया गया है। इन उपायों से समावेशी आर्थिक प्रगति तथा खोज एवं विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता स्पष्ट होती है। विपक्षी कांग्रेस ने इसके जवाब में फौरन एक 'ब्लैक पेपर' जारी कर सरकार के दावों पर सवाल उठाते हुए वर्तमान सरकार की विफलतायें गिनाई हैं।

'ब्लैक पेपर' में सरकार पर आरोप लगाया गया है कि वह आर्थिक असमानतायें बढ़ा रही है, समाज कल्याण कार्यक्रमों को अनदेखा कर रही है तथा बेरोजगारी, कृषि संकट व मुद्रास्फीति दबावों के कारण अर्थव्यवस्था में गिरावट का कारण बन रही है। 'ब्लैक पेपर' में सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा आर्थिक समृद्धि के विमर्श को चुनौती देते हुए कहा गया है कि सामान्य नागरिकों की कठिनाइयां बढ़ गई हैं। कांग्रेस द्वारा जारी 'ब्लैक पेपर' में वही बातें दुहराई गई हैं जो कांग्रेस नेता बार-बार कहते रहे हैं, लेकिन ये एक प्रकार से केवल प्रचार का अंग हैं और वस्तुस्थिति से मेल नहीं खाती हैं। हालांकि, 2014 में मोदी सरकार बनने पर ही उस पर पूर्ववर्ती कांग्रेस नीत संप्रग सरकार के बारे में 'श्वेत पत्र' जारी करने का दबाव था, पर उसने ऐसा नहीं किया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि ऐसा करने से भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रति निवेशकों का विश्वास और डगमगा सकता था। अब मोदी सरकार ने अपने दो कार्यकाल पूरे करने के बाद जो 'श्वेत पत्र' जारी किया है, उसका उद्देश्य संप्रग सरकार के दस साल तथा मोदी सरकार के दस सालों के बीच तुलनात्मक व तथ्यात्मक तस्वीर मतदाताओं के समक्ष रखना है। सरकार को यह श्वेत पत्र इसलिए भी लाना पड़ा है क्योंकि कुछ अर्थशास्त्री व राजनीतिक विश्लेषक मोदी सरकार की उपलब्धियों के प्रति आंखें बंद कर बिना किसी प्रमाण के अपने पुराने 'आरोप' लगातार दुहराते रहते हैं। जहां तक बेरोजगारी और महंगाई का सवाल है, कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के बावजूद भारत का प्रबंधन विकसित पश्चिमी देशों की तुलना में बहुत अच्छा है। ग्रामीण क्षेत्रों समेत सारे देश की प्रगति सबको दिखाई पड़ रही है। आंकड़ों से परे भी देश की जनता व खासकर युवा पीढ़ी अपने भविष्य के प्रति बहुत उत्साहित है तथा उसका वर्तमान सरकार के प्रति विश्वास बढ़ा है।

ईरानी क्रांतिः सफलता के कारण

पश्चिमी खुफिया एजेंसियों ने अपनी गतिविधियों से ईरानी लोगों को पश्चिम-समर्थक नेताओं के खिलाफ खड़े होने के लिए तैयार कर दिया।

नीलांत इलांगमुवा
(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

इस सप्ताह ईरानी क्रांति के 45 साल हो गए। पश्चिमी गठबंधन समझ नहीं पाया कि ईरानी जनता अपने अंतिम राजा मुहम्मद रजा पहलवी के खिलाफ क्यों खड़ी हो गई। अपनी सत्ता के अजेय होने के भ्रम ने पहलवी को 'श्वेत क्रांति' के लिए प्रेरित किया था जिसे प्रगति का पर्याय माना जाता था। इससे ईरान को पश्चिमी उदारवाद व आर्थिक प्रगति का उदाहरण मान लिया गया था। लेकिन समृद्धि की ऊपरी चमक के नीचे जो अशांति पनप रही थी, उसे अधिकांश बाहरी पर्यवेक्षक समझ नहीं सके। 21 साल की आयु में सत्तारूढ़ हुए मुहम्मद रजा शाह पहलवी ने अपने पिता रजा शाह पहलवी से विरासत में सत्ता पाई थी जो पहलवी वंश के संस्थापक थे। स्वयं को साइरस महान का समकालीन स्वरूप समझने वाले पहलवी ने 1970 में प्रेसीपोलिस के खंडहरों पर वैश्विक नेताओं को खुश करने और अपने वंश की वैधता स्थापित करने का काम किया था।

लेकिन उनकी आम जनता गरीबी और दमन की शिकार थी जिसे ईरानी खुफिया पुलिस छिपाती थी और अमेरिका-समर्थित खुफिया व्यवस्था 'सवाक' उसकी सहायता करती थी। इससे कल्पना और यथार्थ में भारी अंतर पैदा हो गया था। सत्ता के बेशर्म प्रदर्शन के माध्यम से शाह ने अपनी वैधता स्थापित करने के प्रयास किए, लेकिन इससे उनकी सरकार का खोखलापन और जनता से अलगाव बढ़ता गया और अंततः उनकी सरकार का पतन हुआ। 1970 के दशक मध्य में जनता में बढ़ते असंतोष के कारण शाह को अपनी सरकार के अत्याचारों के लिए जनता से माफी मांगनी पड़ी। लेकिन इसके बावजूद वे जनता के भारी विरोध प्रदर्शनों को रोकने में विफल हुए जिन्होंने 'इस्लामी क्रांति' को जन्म दिया। इस क्रांति के परिणामस्वरूप शाह का शासन तेजी से ढह गया तथा उस राजतंत्र का अंत हुआ जो हजारों साल से जारी था। इस असाधारण घटना ने पश्चिमी खुफिया एजेंसियों व प्रशासनिक हस्तक्षेप की सीमायें स्पष्ट कर दीं तथा बीसवीं शताब्दी में भू-राजनीतिक स्थितियों को पूरी तरह बदल डाला। अगस्त, 1978 में बढ़ती अशांति के बावजूद सीआईए ने नतीजा निकाला था कि 'ईरान में क्रांति या क्रांति-पूर्व की स्थिति नहीं है।' वास्तव में ईरान के प्रति दुश्मनी की भावना किसी राजनीतिक विचारधारा के बजाय तेल उद्योग पर नियंत्रण की इच्छा का परिणाम था। इस मुद्दे पर सीआईए द्वारा तैयार विमर्श को अक्सर 'ब्लैक प्रोपेगंडा' कहा जाता है। 1953 में ईरान के लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री मुहम्मद मुसादेह के खिलाफ ब्रिटेन तथा अमेरिका ने सैनिक विद्रोह को खड़ा किया था। इसे 'आपरेशन एजेक्स' का नाम दिया गया और ऐसी ही कार्रवाइयां ग्वाटेमाला, चिली, ब्राजील व ग्रीस जैसे अन्य देशों में भी की गईं।

लेकिन पश्चिमी प्रभुत्व स्थापित करने के इरादे से किए इस सफल विद्रोह के कारण क्षेत्र में व्यापक विरोध फैल गया जिसे अयातुल्ला खुमैनी के नेतृत्व में 'इस्लामी क्रांति' का स्वरूप मिला। इससे पश्चिमी विदेश नीति की असलियत उजागर हुई जो अक्सर लोकतंत्र व स्वतंत्रता के नाम पर अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षायें छिपाने का प्रयास करती थी तथा शोषण व दमन का दुष्चक्र पैदा करती थी। मुसादेह के प्रधानमंत्री बनने के पहले ईरानी तेल उद्योग पर एंग्लो-ईरानी तेल कंपनी के माध्यम से पूर्ण ब्रिटिश नियंत्रण था। 1951 में तेल उद्योग के राष्ट्रीयकरण से क्षेत्र में ब्रिटिश हितों को करारा धक्का लगा था। इस प्रकरण में मुसादेह राजतंत्र व विदेशी हस्तक्षेप के खिलाफ विमर्श में केन्द्रीय स्थान पर थे और उनकी सरकार के पतन से ईरान में लोकतांत्रिक आकांक्षाओं पर कुठाराघात हुआ जिससे पुनः पश्चिमी संरक्षण में स्वेच्छाचारी शासन स्थापित हो गया। इस दृष्टिकोण से ईरानी क्रांति न केवल ईरान के आधुनिक इतिहास का एक प्रमुख क्षण है, बल्कि यह पश्चिम एशिया की भू-राजनीति में भी महत्वपूर्ण परिघटना है। इसने राजतंत्र को नष्ट कर इस्लामी गणतंत्र स्थापित किया। इसमें सेक्युलरवादियों, राष्ट्रवादियों, उदारवादियों और वामपंथियों के एक गठजोड़ ने भी सहयोग दिया जो शाह के तानाशाही शासन के खिलाफ जनता की कठिनाइयों को उजागर कर रहे थे। इस्लामी क्रांति का प्रभाव ईरान की सीमाओं से आगे बढ़ा और उसने पड़ोसी देशों में इस्लामवादी आंदोलनों को जन्म देकर मध्यपूर्व की भू-राजनीति में व्यापक परिवर्तन किए। अयातुल्ला खुमैनी के करिश्माई नेतृत्व और धार्मिक पद ने क्रांति के पक्ष में जनता का समर्थन प्राप्त करने में केन्द्रीय भूमिका अदा की। इसके साथ ही बाजार और व्यापार ने शक्तिशाली आर्थिक शक्ति के रूप में क्रांति को और विस्तार दिया। ईरानी क्रांति एक महत्वपूर्ण केस स्टडी की तरह है जो क्रांतिकारी आंदोलनों में जटिल सामाजिक-राजनीतिक गत्यात्मकताओं को प्रदर्शित करती है। धार्मिक विचारधारा जनता को लामबंद करने तथा उसके राजनीतिक प्रतिरोध को वैधता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। क्रांति के बाद समावेशी शासन का महत्व समझा गया तथा प्रतिरोधी शक्तियों के हाशियाकरण के खिलाफ चेतावनी दी गई क्योंकि इससे तानाशाही व नस्ली हिंसा भड़क सकती थी। ईरानी क्रांति से वैश्विक राजनीति के परस्पर जुड़ाव तथा अवांछित परिणामों से बचने के लिए राष्ट्रीय संप्रभुता को महत्व मिला।

ईरानी क्रांति के दशकों बाद ईरान अब भी बहुआयामी विरासत से आंतरिक और बाहरी रूप से निपट रहा है। यह घटना सामाजिक-राजनीतिक ढांचे में क्रांतिकारी उभार की तीव्रता को याद दिलाती है। ईरान की विदेश नीति उसकी गहरी सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक विरासत से प्रभावित है। ईरानियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत 'जोरोस्ट्रनिज्म' जैसी प्राचीन सभ्यताओं से प्रभावित है जिसने दुनिया भर के धर्मों को बदलने में अपनी भूमिका निभाई। इसके बावजूद वे सामूहिक रूप से शताब्दियों के विदेशी दम और शोषण को याद रखते हैं जिसमें पश्चिम की साम्राज्यवादी आकांक्षायें तथा ईरानी लोकतंत्र के खिलाफ उनके इशारे पर किया विद्रोह भी शामिल है। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विदेशी शक्तियों के प्रति ईरान का दृष्टिकोण निर्धारित करती है। इनमें अमेरिका भी शामिल है जो अक्सर लोकतांत्रिक सिद्धान्तों को वास्तव में समर्थन देने के बजाय अपने आर्थिक व रणनीतिक हितों से संचालित होता है। ईरान के विदेशी संबंधों को समझने के लिए उसकी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भू-राजनीति को समझना जरूरी है जो उसकी नीतियों को स्वरूप देते हैं। पश्चिमी दुनिया से ईरान के संबंध शताब्दियों से उसके साथ संबंधों व टकरावों पर आधारित हैं जो वर्तमान समय में ईरान की विदेश नीति का निर्धारण करते हैं। ईरान की ऐतिहासिक विरासत अंतरराष्ट्रीय समुदाय से उसके संबंधों को परिभाषित करती है।

ईरानी क्रांति इतिहास में सत्ता संतुलन के महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय है जहां विजयें भविष्य में प्रतिरोध के बीज बोती हैं। अनेक चुनौतियों के बावजूद ईरान ने समय बीतने के साथ अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं। युनेस्को के आंकड़ों से स्पष्ट है कि ईरान में साक्षरता दर तथा जीवन प्रत्याशा में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इससे शिक्षा व स्वास्थ्यरक्षा के प्रति ईरान सरकार की प्रतिबद्धता स्पष्ट होती है। इसके साथ ही ईरान की अर्थव्यवस्था में व्यापक प्रगति हुई है। आज यह देश वैश्विक रैंकिंगों में महत्वपूर्ण स्थान बनाने के साथ ही अंतरिक्ष तकनीक जैसे क्षेत्रों में अपनी गतिविधियों का विस्तार कर रहा है।

पश्चिम-समर्थक शक्तियों पर ईरान की 'इस्लामी क्रांति' की विजय ने न केवल ईरान की घरेलू राजनीतिक संरचना में व्यापक परिवर्तन किए हैं, बल्कि उसकी ध्वनि सारी दुनिया में सुनाई दे रही है। इससे पश्चिमी प्रभुत्व को चुनौती देने वाले अन्य आंदोलनों को प्रेरणा मिल रही है। दुर्भाग्य से पश्चिम के अनेक रणनीतिकार व नीति-निर्माता अपनी पूर्वाग्रही धारणाओं के चलते जल्दी से नतीजे निकाल लेते हैं। इसके परिणामस्वरूप लाल सागर में अशांति तथा पश्चिम एशिया में लंबे समय से उथलपुथल की स्थिति बनी हुई है। यह उथलपुथल फिलिस्तीन से लेकर सीरिया तक जारी है। लू शुन ने क्रांति की अवधारणा अपने लेखों में जोर दे कर बताई है कि यह इस उद्देश्य में निहित है- 'लोगों को मौत का सामना करने के बजाय उनका जीवन सुनिश्चित हो।'

समाज सेवा और आध्यात्मिकता का संगम

आध्यात्मिकता, संस्कृति और समाज सेवा सही लोगों के एक साथ मिलकर काम करती है।

प्रभा गुप्ता
(लेखिका, सामाजिक विषयों पर टिप्पणीकार हैं)

शायद ही कभी हम मानवता की भलाई के लिए आध्यात्मिकता, सेवा और संस्कृति का संगम देखते हैं। हालाँकि, जैसा कि वे कहते हैं, हर चीज़ के लिए हमेशा एक समय होता है। एक ही मंच पर आध्यात्मिक प्रमुखों का ऐसा संगम और भी दुर्लभ है। गीत भक्ति अमृत महोत्सव, एक आध्यात्मिक उत्सव, में स्वामी श्री गोविंद देव गिरिजी महाराज, श्री श्री रविशंकर, सुधांशुजी महाराज, श्रीमती राजश्रीजी बिड़ला, साध्वी ऋतंभराजी, आदरणीय श्री चिन्ना जीयर स्वामीजी महाराज और बाबा जैसे आध्यात्मिक गुरुओं और बुद्धिजीवियों की सम्मानित उपस्थिति देखी गई। सत्यनारायणजी मौर्य. विशेष रूप से, बाबा रामदेव और योगी आदित्यनाथ इस अवसर पर उपस्थित रहेंगे।

गीता भक्ति अमृत महोत्सव आध्यात्मिकता, समृद्ध भारतीय संस्कृति, देशभक्ति और भक्ति का एक अनूठा मिश्रण है। इस कार्यक्रम में 2500 वैदिक आचार्यों द्वारा हरिकीर्तन, पवित्र ग्रंथों के निरंतर जप और भागवत कथा के साथ 81 कुंडीय महायज्ञ का दिव्य दृश्य देखा गया। 450 से अधिक कलाकारों ने महाकाव्य रामायण और भारतीय संतों की परंपरा पर महानाट्य प्रदर्शन किया। यह आध्यात्मिक उत्सव दिव्य वैदिक विरासत, समृद्ध भारतीय संस्कृति और भक्ति को श्रद्धांजलि देता है।

इस आयोजन की जो बात अलग है, वह है सामाजिक मुद्दों पर इसका ज़ोर देना। गीता परिवार ने समाज में महिलाओं के महत्व और उन्हें सम्मान और सशक्त बनाने की हमारी मौलिक जिम्मेदारी को रेखांकित करने के लिए मातृशक्ति सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में महिला सशक्तिकरण पर गहन विचार-विमर्श हुआ। देवाची आलंदी में गीता भक्ति अमृत महोत्सव में उपस्थित सभी लोगों को एकजुट करते हुए श्री राम जय राम, जय जय राम के गूंजते मंत्रों के साथ बाघवाड कथा की शुरुआत हुई।

कार्यक्रम के दौरान सामाजिक उत्थान और समाज के सशक्तिकरण के लिए समर्पित विभिन्न क्षेत्रों की बारह सफल महिलाओं को सम्मानित किया गया। गोविंद गिरजी महाराज ने टिप्पणी की, आज, जब हम इन बारह उल्लेखनीय महिलाओं का सम्मान करते हैं, तो आइए हम हमारी सांस्कृतिक विरासत के सार को दर्शाते हुए, समाज के कल्याण के लिए उनके मूल्यवान प्रयासों और अटूट प्रतिबद्धता को पहचानें।

अपने विचार साझा करते हुए, श्री श्री रविशंकर ने कहा, आपने ज्ञान के माध्यम से भारत के संत समुदाय को एकजुट किया है, और यह ज्ञान कोई और नहीं बल्कि दिव्य भगवान कृष्ण का है। आपका उत्सव, गीता भक्ति अमृत महोत्सव, एक संयोग नहीं बल्कि एक दिव्य व्यवस्था है। भक्त भगवत गीता पथ के भावपूर्ण मंत्रोच्चार में डूब गए जो गीत भक्ति अमृत महोत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा था। एक ज्ञानवर्धक ज्ञानेश्वरोपासना सत्र हुआ, जहाँ गोविंद गिरजी महाराज ने ज्ञानेश्वर मौली की पूजा करके और उनकी शिक्षाओं पर विचार करके अपने शिष्यों को गहन ज्ञान प्रदान किया। कार्यक्रम में एक सकारात्मक माहौल छा गया क्योंकि वेदशास्त्र संवाद के माध्यम से समृद्ध गुरु-शिष्य परंपरा को पुनर्जीवित किया गया। देश भर से वैदिक विद्वानों ने इस सदियों पुरानी परंपरा के माध्यम से ज्ञान फैलाने के महत्व पर जोर दिया।

आध्यात्मिक कार्यक्रम में जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वामी विजयेंद्र सरस्वती जी महाराज और आनंदमूर्ति गुरु मां जैसे दिग्गजों सहित श्रद्धेय आध्यात्मिक मार्गदर्शकों और बुद्धिजीवियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। गोविंद गिरजी महाराज ने कहा, गीता भक्ति अमृत महोत्सव आध्यात्मिक जागृति और ज्ञानोदय की यात्रा रही है। आलंदी की भूमि में श्रीमद्भगवद्गीता की दिव्य शिक्षाओं को देखना सम्मान की बात है। उन्होंने आगे श्री धीरेंद्रकृष्ण शास्त्री जी महाराज के बौद्धिक ज्ञान और युवाओं के बीच इस तरह के आध्यात्मिक ज्ञान की सार्वभौमिक अपील का उल्लेख किया, जो भक्तों के उत्साही अनुसरण में स्पष्ट है।

आप की बात

भारत की राजनीति

भारत प्रजातंत्र का अमृत महोत्सव मना रहा है और अब आम चुनाव की तैयारियां हो रही हैं। और भाजपा बड़ी पार्टी होने के बावजूद क्षेत्रीय दलों से गठबंधन कर रही है तो कांग्रेस व अन्य दलों ने भी आईएनडीआईए गठबंधन बनाया है। हालांकि, कुछ दल अपने बलबूते पर अकेले चुनाव लड़ने की घोषणा कर चुके हैं। कुल मिलाकर गठबंधन की राजनीति सिर्फ सत्ता तक पहुंचने का मार्ग बन चुकी है। इस बार भी भाजपा के बहुमत पाने के आसार बन रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद वह क्षेत्रीय दलों को साथ ले रही है ताकि सशक्त सरकार दे सके। वह अपने नेतृत्व वाले गठबंधन-राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन-राजग का विस्तार करने के प्रयास भी कर रही है। दक्षिण भारत की राजनीति में गठबंधन राजनीति का प्रभुत्व है। हालांकि, सरसरी तौर से देखें तो गठबंधन की राजनीति में कोई बुराई नहीं है। लेकिन गठबंधन बनाकर सीटें जीतने के बाद उच्च पद को लेकर गठबंधन धर्म का त्याग कर दूसरे गठबंधन से जुड़ जाना मतदाताओं के साथ सरासर धोखाधड़ी है इस प्रवृत्ति पर रोक लगनी चाहिए। गठबंधन को अपना एजेंडा तथा चुनाव घोषणापत्र अलग से जारी करना चाहिए तथा गठबंधन तोड़ कर दूसरी पार्टी के साथ जाने को दलबदल विरोधी कानून के दायरे मे लाया जाना चाहिए।

- विभूति बुपक्या, खाचरोद

भारत के रत्न

कर्पूरी ठाकुर और लाल कृष्ण आडवाणी के बाद अब पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और पीवी नरसिम्हा राव एवं कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर एम.एस. स्वामीनाथन को भारत रत्न देने की घोषणा की गई! यह पहली बार हुआ है कि किसी सरकार ने 1 महीने में पांच विभूतियों को भारत रत्न सम्मान से सम्मानित किया है। सवाल उठता है कि आजादी के बाद से अधिकांश भारत रत्न पुरस्कार राजनीति से जुड़े लोगों को ही दिए गए हैं। हालांकि, अन्य क्षेत्र के भी कुछ लोगों को यह सर्वोच्च पुरस्कार मिला है। इस बार भी पांच में मात्र एक वैज्ञानिक को भारत रत्न मिला। एक प्रधानमंत्री ने तो स्वयं ही अपने आप को भारत रत्न घोषित कर दिया था। अच्छा होगा कि भारत रत्न राजनेताओं के बजाय अविष्कारकों, वैज्ञानिकों, चिकित्सा वैज्ञानिकों, आदि को दिए जाएं। मोदी सरकार ने पद्म पुरस्कारों का एक प्रकार से लोकतांत्रीकरण किया है और ये अनेक अनाम लोगों को मिले हैं जो मीडिया की सुर्खियों से बहुत दूर थे। भारत रत्न पुरस्कार का सम्मान बढ़ाने के लिए जरूरी है कि इसे भी राजनीतिक नफा-नुकसान के बजाय भारत के अतीत, वर्तमान व संभवत: भविष्य को गौरवान्वित करने वाले महान लोगों को दिया जाए।

- सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

मोदी के काम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने शानदार कामों से 140 करोड़ भारतीयों का आशीर्वाद सदा मिलता रहेगा। सदियों की प्रतीक्षा के बाद भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण और उसमें रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा, मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक से मुक्ति तथा अनेक अन्य ऐसे कामों पर देश को तो गर्व है ही, सारी दुनिया भी गौरान्वित हो रही है। हमारा राष्ट्र सबका साथ व सबका विकास के रास्ते पर चल कर सबका विश्वास जीत रहा है। उन्होंने कर्पूरी ठाकुर तथा लालकृष्ण आडवाणी और चौधरी चरणसिंह, नरसिम्हाराव व एम. एस. स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित करके हर व्यक्ति का दिल जीत लिया है। वैसे तो हमारा देश इस समय चहुंमुखी विकास कर ही रहा है, लेकिन इस समय बसंत-बहार से पहले देश में भारत-रत्न की बहार आ गई है। शायद ही देश के इतिहास में एक साथ इतने लोगों को भारत-रत्न से नवाजा गया होगा। भारत को लाइसेंस-परमिट राज से मुक्त कर प्रगति के पथ पर तेजी से बढ़ाने वाले नरसिम्हा राव को सम्मान इस दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है कि गांधी-नेहरू परिवार तक संकुचित कांग्रेस ने उनका शव तक कांग्रेस मुख्यालय में लाने नहीं दिया था। चरण सिंह के साथ स्वामीनाथन को भारत रत्न गांवों और देश के किसानों का भी सम्मान है।

-शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

मोदी का आत्मविश्वास

मोदी के आलोचक कह सकते हैं कि प्रधानमंत्री का भाजपा और एनडीए के बारे में इतनी सीटों की घोषणा करना अहंकार हो सकता है, लेकिन परिस्थितियों को देखते हुए यह मोदी का आत्मविश्वास है। जिस तरह विपक्षी इंडिया गठबंधन बिखरने लगा है और उसके घटक अलग-अलग दिशाओं में जा रहे हैं उससे लगता नहीं कि विपक्ष एकजुट होकर भाजपा या मोदी का सामना करने में सक्षम होगा। इसलिए अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा और उसके नेतृत्व में राजग को हराना दिनेंदिन लगभग असंभव होता जा रहा है। यही मोदी के आत्मविश्वास का कारण है। भाजपा इस बार 1984 में कांग्रेस के पक्ष में आए चुनावी परिणामों को भी पीछे छोड़ना चाहती है जिसमे उसने 404 सीटें जीती थीं। हालांकि, अभी लोगों को मोदी के दावों पर पूरा विश्वास नहीं है, लेकिन 2014 में भाजपा ने 272 प्लस तथा 2019 में 300 पार का नारा दिया था और ये दोनों सही सिद्ध हुए। 2014 व 2019 के मुकाबले आज मोदी की छवि और मजबूत हुई है, देश की जनता और नौजवानों का उन पर विश्वास बढ़ा है तथा विपक्ष खस्ताहाल है।

- बाल गोविंद, नोएडा

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 12 फरवरी, 2024

दैनिक जागरण

शांति वास्तव में प्रगति की पहली सीढ़ी है

हल्द्वानी हिंसा के सबक

इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि उत्तराखंड में हल्द्वानी के बनभूलपुरा इलाके में हुई भीषण हिंसा में शामिल कुछ संदिग्ध तत्वों को गिरफ्तार कर लिया गया है, क्योंकि इन गिरफ्तारियों के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि दंगाइयों के दुस्साहस का दमन हो सकेगा। सरकारी जमीन पर किए गए अतिक्रमण को हटाने के लिए गई नगर निगम की टीम और पुलिस पर जैसा भीषण हमला किया गया, वह कानून के शासन को दी जाने वाली खुली चुनौती है। ऐसी चुनौती देने वाले तत्वों का दमन किया जाना आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि सरकारी जमीन पर काबिज लोगों ने न केवल पुलिस पर हमला किया, बल्कि थाने को आग भी लगा दी। यह तो गनीमत रही कि पुलिसकर्मी किसी तरह जान बचाकर भागने में सफल रहे, अन्यथा उन्हें थाने के अंदर ही जलाकर मार दिया जाता। यह साधारण बात नहीं कि दंगाइयों के हमले में करीब दो सौ पुलिसकर्मी घायल हुए। इसका सीधा मतलब है कि दंगा करने वालों ने पूरी तैयारी कर रखी थी और उन्हें न तो पुलिस का कोई भय था और न ही अदालती आदेशों का उनके लिए कोई मूल्य-महत्व था। आखिर जब हाई कोर्ट ने नगर निगम की जमीन पर अवैध कब्जा करने वालों को राहत देने से इन्कार कर दिया था तब फिर उन्हें अदालत के आदेश का पालन करना चाहिए था या फिर हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाना चाहिए था। इस तरह से कानून हाथ में लेना खुली अराजकता के अलावा और कुछ नहीं।

भीषण हिंसा का शिकार बना हल्द्वानी का बनभूलपुरा क्षेत्र वही इलाका है जहां रेलवे की जमीन पर भी बड़े पैमाने पर अवैध कब्जा किया गया है। हाई कोर्ट ने रेलवे की जमीन को भी खाली करने के आदेश दिए थे। फिलहाल यह मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है। सुप्रीम कोर्ट को ऐसे मामलों को गंभीरता से लेना चाहिए और ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिससे सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करने वालों को संरक्षण मिले। बनभूलपुरा में हिंसा इस बहाने भड़काई गई कि नगर निगम की जमीन पर तथाकथित मस्जिद भी बनी हुई थी। सरकारी जमीन पर अवैध तरीके से बनाए गए किसी भी धर्मस्थल को हटाने में कोई रियायत नहीं बरती जानी चाहिए- फिर वह चाहे मंदिर हो, मस्जिद, चर्च या फिर अन्य कोई धार्मिक स्थल। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कुछ ही समय पहले हरियाणा के फरीदाबाद जिले में वनभूमि पर बसाए गए खोरी गांव को सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर खाली कराया गया था। इस क्रम में सैकड़ों घरों के साथ ही मंदिर और मस्जिद भी हटाए गए थे। यह ठीक नहीं कि सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करने के लिए धार्मिक स्थलों की आड़ ली जाए। इसी के साथ इस पर भी ध्यान देने की जरूरत है कि स्थानीय प्रशासन एवं राज्य सरकारों को तभी सक्रिय हो जाना चाहिए जब सरकारी जमीनों पर अतिक्रमण अथवा अवैध कब्जे की शुरुआत हो रही होती है।

गुलदारों के हमले

यह किसी से छिपा नहीं है कि वन्यजीव संरक्षण में उत्तराखंड महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। बाघ, गुलदार, हाथियों का बढ़ता कुनबा इसका उदाहरण हैं, लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। वह है वन्यजीवों के बढ़ते हमले और इसमें गुलदार पहली पायदान पर है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ही नजर दौड़ाएं तो श्रीनगर, हल्द्वानी, खिर्सू, पाबौ समेत तमाम ऐसे क्षेत्र हैं, जो गुलदार के आंतक से जूझ रहे हैं। आए दिन गुलदारों के हमले सुर्खियां बन रहे हैं। मानव वन्यजीव संघर्ष के आंकड़ों को ही देखें तो इनमें सर्वाधिक नींद गुलदार ने उड़ाई हुई है। पहाड़ के गांवों से निरंतर हो रहे पलायन के पीछे भी एक बड़ा कारण गुलदार समेत दूसरे वन्यजीवों के हमले हैं। स्थिति यह हो चली है कि गुलदार गांव, घर व खेतों के आसपास ऐसे घूम रहे हैं, मानो ये पालतू जानवर हों। मौका पाते ही ये मनुष्य पर हमला कर रहे हैं। अब यह समस्या और अधिक गहरा गई है। यद्यपि, तमाम मंचों पर इस स्थिति को लेकर चिंता जताई जाती रही है। गुलदार के हमलों को थामने के दृष्टिगत कार्ययोजना तैयार कर धरातल पर उतारने की बड़ी-बड़ी बातें भी होती आ रही हैं, लेकिन धरातल पर ऐसा कुछ नजर नहीं आ रहा। इतना अवश्य है कि किसी क्षेत्र में गुलदार के सक्रिय होने या फिर हमले करने पर उसे मनुष्य के लिए खतरनाक घोषित कर पकड़ने अथवा मारने को कदम उठाए जा रहे हैं, लेकिन यह समस्या का स्थायी समाधान तो कतई नहीं है। ऐसे उपाय करने की आवश्यकता है, जिससे गुलदार जंगल की देहरी पार कर आबादी वाले क्षेत्रों में कदम न रख पाएं। इसके लिए तात्कालिक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण से कदम उठाने होंगे। उम्मीद की जानी चाहिए कि वन विभाग इस दिशा में गहनता से मंथन कर प्रभावी कार्ययोजना को धरातल पर उतारेगा। उसकी इस पहल में आमजन को भी अपनी भूमिका सुनिश्चित करनी होगी।

सत्य और तथ्य सिद्ध है भारतीय संस्कृति

हृदयनारायण दीक्षित

कुछ तत्वों के दुष्प्रचार के बावजूद वैज्ञानिक साक्ष्य प्राचीन भारतीय सभ्यता-संस्कृति को यथार्थ सिद्ध करते रहे हैं। लाक्षागृह के रूपमें इसमें ताजा कड़ी जुड़ी है

अवधेश राजपूत

भारत प्राचीन राष्ट्र है। सांस्कृतिक दृष्टि से विश्व का पहला राष्ट्र। ऋग्वेद विश्व मानवता का प्राचीनतम शब्द साक्ष्य है। महाभारत और रामायण दुनिया के प्रतिष्ठित महाकाव्य हैं। दर्शन, विज्ञान और गणित में भी भारत की उल्लेखनीय प्रतिष्ठा है। बावजूद इसके कथित उदारवादी और वामपंथी यहां के प्राचीन ज्ञान-ग्रंथों को भी कल्पना बताते रहे हैं। जबकि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण यानी एएसआइ के उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य सभ्यता और संस्कृति को यथार्थ सिद्ध करते रहे हैं। ताजी सूचना भी उत्साहवर्द्धक है। अदालत ने बागपत के बरनावा में महाभारतकालीन लाक्षागृह की पहचान की है। 1953 में खोदाई के दौरान यहां लगभग 4500 वर्ष पुरानी पुरातात्विक महत्व की सामग्री मिली। 1970 में उत्तर प्रदेश वक्फ बोर्ड ने इसे मजार और कब्रिस्तान बताया। हिंदू पक्ष का दावा था कि यह पांडवों का लाक्षागृह है। यहीं दुर्योधन ने पांडवों को जलाकर मार देने की साजिश की थी। लाक्षागृह से जुड़ी सुरंग भी प्राप्त हुई है। पांडव इसी सुरंग से बच निकले थे। यहां प्राचीन बर्तन और अन्य साक्ष्य भी मिले हैं। अब महाभारतकालीन विशिष्ट स्थान मिला है। वक्फ बोर्ड हिंदू उपासना केंद्रों और संपत्तियों पर निराधार दावों के लिए कुख्यात है। अक्सर उसने उन स्थानों पर भी दावा किया, जिनका इतिहास देश में इस्लाम के आगमन से भी पुराना है। इसीलिए सेना और रेलवे की संपत्ति के बाद देश में सबसे बड़ी भू-संपदा वक्फ के पास है। बोर्ड लगभग 10 लाख एकड़ जमीन का मालिक है।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता विश्वविख्यात है, लेकिन स्वयंभू उदारपंथी ऋग्वेद को चरवाहों का गीत बताते रहे। यूनेस्को ने इसे काफी पहले विश्व विरासत घोषित कर दिया था। विश्व धरोहरों की सूची में अब 42 भारतीय स्थल हैं। मोदी सरकार ने 41 स्थलों को सूची में शामिल कराने का और आग्रह किया। दो स्थल सम्मिलित किए जा चुके हैं। मध्यकाल में विदेशी हमलावरों ने लाखों मंदिर ध्वस्त किए। विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले एएसआइ के उत्खनन में प्राचीन सभ्यता के अवशेष मिल रहे हैं। 2018 में संस्कृति मंत्रालय से संबंधित सिंधु सभ्यता की अध्ययन समिति ने हरियाणा के भिराना और राखीगढ़ी की खोदाई के अध्ययन को महत्वपूर्ण बताया था। इस पुरातात्विक क्षेत्र में कार्बन डेटिंग के अनुसार ईसा पूर्व 7000-6000 वर्ष की सभ्यता का अनुमान लगाया गया। यह अवधि वैदिक काल की सभ्यता से जुड़ती है। कार्बन डेटिंग विश्लेषण को प्राचीन समय से जोड़कर अध्ययन होना चाहिए।

ऋग्वेद और हड़प्पा की सभ्यता में तमाम समानताएं हैं, लेकिन कुछ लोग हड़प्पा को प्राचीन और वैदिक सभ्यता को परवर्ती बताते हैं। उनके तर्क दयनीय हैं। वे हड़प्पा को नगरीय एवं ऋग्वैदिक सभ्यता को ग्रामीण बताते हैं, लेकिन ऋग्वेद में नगरीय सभ्यता के तमाम उल्लेख हैं। यहां नगर के लिए पुर शब्द आया है और नगर प्रमुख के लिए पौर। कथित उदारपंथी अपनी स्थापनाओं को लेकर लज्जित होंगे। वे सुमेरी सभ्यता को हड़प्पा से भी प्राचीन बताते हैं। हड़प्पा को सुमेरी सभ्यता की छाया मानते हैं। वे सरस्वती नदी का भौगोलिक साक्ष्य नहीं देखते। ऋग्वेद के समय सरस्वती जल भरी हैं। यह तथ्य हड़प्पा से पुराना है। सुमेरी, मिनोवन, मितन्नी और हित्ती सभ्यताएं वैदिक सभ्यता के बाद की हैं। दुनिया की किसी भी सभ्यता एवं संस्कृति का अध्ययन ऋग्वेद को अलग हटाकर नहीं किया जा सकता। ऋग्वेद में वरुण के घर को सौ खंभों वाला बताया गया है। ऋग्वेद, महाभारत एवं रामायण में सभागारों के भी उल्लेख हैं। सभागारों में बैठकें होती थीं। अयोध्या, मथुरा, काशी, पाटलिपुत्र और उज्जैन विश्व चर्चित प्राचीन नगर थे।

साम्राज्यवादी शक्तियां भारत को सदा पराजित सिद्ध करने के लिए मूल निवासी आर्यों को विदेशी हमलावर बताती रही हैं। उनका तर्क था कि हम विदेशी तो नया क्या है? इससे पहले यहां इस्लाम का शासन था। इस्लाम से पहले यहां विदेशी आर्य हमलावर थे। इस धारणा का प्रतिकार हुआ। अब वे लज्जित हैं। वे आर्यों को विदेशी हमलावर नहीं बताते, लेकिन विदेशी बताते हैं। राखीगढ़ी और सिनौली में एएसआइ ने ईसापूर्व 2000-1800 के समय का ताम्र और मूर्तियों से सज्जित रथ पाया था। हथियार और आभूषण भी मिले थे। रथ वैदिक काल से लेकर रामायण-महाभारत तक प्रतिष्ठापूर्ण वाहन रहा है। पीवी काणे ने 'धर्मशास्त्र का इतिहास' में वैदिक संहिताओं का काल 4000-1000 ईसा पूर्व तक बताया है। ऋग्वेद का कुछ हिस्सा 5000 साल से भी पुराना है। ऋग्वेद के रचनाकाल से पहले ही भारतीय रथारूढ़ रहे। रथों में घोड़े जोते जाते थे। घोड़े भारतीय थे। ऋग्वेद के इंद्र अश्वपति कहे गए हैं। घोड़ा और रथ समृद्धि के प्रतीक थे। उपनिषदों में इंद्रियों को घोड़ा बताया गया है। सूर्यदेव को भी रथारूढ़ बताया गया है। काल देवता भी रथ पर चलते हैं। अथर्ववेद के कालसूक्त में ज्ञानी ही कालरथ पर बैठ सकते हैं। रथ सुमेरी सभ्यता में भी थे, पर उनके पहियों में आरे नहीं थे। बागपत में उत्खनन से प्राप्त 2000 साल पुराना रथ प्राचीन वैदिक सभ्यता का साक्ष्य है।

साक्ष्य और भी हैं। राखीगढ़ी के 5000 वर्ष पुराने नरकंकाल के कुछ वर्ष पूर्व हुए डीएनए परीक्षण ने आश्चर्यचकित किया था। डेक्कन कालेज पुणे के कुलपति वसंत शिंदे एवं बीरबल साहनी प्रयोगशाला के प्रमुख नीरज के नेतृत्व में हुए डीएनए परीक्षण के अनुसार शव संस्कार की शैली ऋग्वैदिक समाज से मिलती है। कंकाल परीक्षण में उच्चतर स्वास्थ्य और वैदिक कालीन ज्ञान तंत्र पाया गया है। ऐसे अध्ययन आर्यों को भारत का मूल निवासी सिद्ध करते हैं। डा. भगवान सिंह, डा. आंबेडकर और डा. रामविलास शर्मा जैसे विद्वानों ने तमाम तर्क देकर आर्यों को भारत का मूल निवासी बताया है, लेकिन भारतीय संस्कृति को हेय सिद्ध करने वाले तत्व अपने पूर्वज आर्यों को भी विदेशी बताते आए हैं। आर्यों के हमले और कहीं बाहर से यहां आने का कोई साक्ष्य नहीं। भारत के प्राचीन आख्यानों में आर्यों के विदेशी होने का कोई उल्लेख नहीं। श्रीराम और श्रीकृष्ण भी कोरी कल्पना नहीं हैं। यथार्थ हैं। अयोध्या, मथुरा एवं काशी भी सत्य तथ्य हैं। भारतीय अपनी सांस्कृतिक मान्यता और आस्था-आस्तिकता को लेकर सजग हैं। वैज्ञानिक विवेचन ने हमारी सभ्यता और संस्कृति को सही सिद्ध किया है। राष्ट्रजीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से आने वाली सूचनाएं राष्ट्रीय पौरुष और स्वाभिमान को बढ़ा रही हैं। वास्तविक इतिहास बोध पर गर्व समय का आह्वान है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं)
response@jagran.com

प्रचार के लिए भावनाओं से खिलवाड़

पिछले दिनों अभिनेत्री और माडल पूनम पांडे ने प्रचार पाने के लिए पहले तो अपनी मौत की झूठी खबर फैलाई, फिर अगले ही दिन प्रकट हो गईं। 'सारी' बोलते हुए बहाना बनाया कि वह सर्विकल कैंसर के प्रति औरतों में जागरूकता फैलाना चाहती थीं, इसलिए उन्होंने ऐसा किया। पूनम पांडे की मौत की खबर में उनकी उम्र मात्र 32 साल बताई गई। यह भी कहा गया कि सर्विकल कैंसर के कारण वह दुनिया छोड़ गईं। उन्होंने इस तरह की हरकत करने से पहले क्या इस बात पर गौर किया कि 32 साल की जो भी लड़कियां और स्त्रियां होंगी, उनमें इसे सुनकर कितना डर बैठेगा? यह खबर सुनकर बड़ी उम्र की स्त्रियों को भी कोई कम डर नहीं लगा होगा, क्योंकि यदि मात्र 32 साल की उम्र में किसी औरत को सर्विकल कैंसर हो सकता है तो उन्हें क्यों नहीं।

कैंसर जैसा रोग कोई हंसी-मजाक करने की बात नहीं है। सर्विकल कैंसर से अपने देश में हर साल लाखों औरतें मर जाती हैं। जो महिला इस रोग से गुजरती है, वह और उसके परिवार वाले क्या-क्या झेलते हैं? पूनम पांडे ने प्रचार की भूख के लिए इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। दुखद है कि उन जैसी सेलेब्रिटी को भी कैंसर जैसी गंभीर बीमारी एक बेचने लायक और नाम कमाने लायक चीज लगती है। वैसे वह अतीत में भी अपने तमाम बयानों और हरकतों के लिए चर्चित रही हैं। इसके लिए उनकी आलोचना भी की गई। कई जगह पुलिस में उनकी शिकायत भी की गई। शायद वह ऐसा चाहती भी होंगी, क्योंकि प्रसिद्धि के लिए नकारात्मक प्रचार बहुत अच्छा माना जाता है। कुछ वर्षों से यह एक रिवाज सा चल पड़ा है कि अपने बारे में कुछ ऐसी बातें की जाएं, जो लोगों में सहानुभूति जगाएं। कुछ साल पहले संजय दत्त ने कहा था कि उन्हें कैंसर हो गया है और वह अपना इलाज कराने जा रहे हैं। फिर कुछ ही दिनों बाद उन्होंने कहा कि वह ठीक हो गए हैं। दीपिका पादुकोण ने भी डिप्रेशन में होने की बात बार-बार कही थी। मार्केटिंग एजेंसियों की ऐसी रणनीति बेहद खतरनाक है, जो रोगों को अपने मुनाफे के लिए बेचती हो। इन्हें उन लोगों को देखना चाहिए जिन्हें ऐसे गंभीर रोग होते हैं। बहुत से लोगों के पास इलाज के लिए पैसे भी नहीं होते। वे यूं ही दम तोड़ देते हैं। जो लोग चर्चित होने के लिए ऐसे रोगों को बेचते हैं वे पीड़ितों का मजाक उड़ाते हैं।

क्षमा शर्मा

मार्केटिंग एजेंसियों की ऐसी रणनीति बेहद खतरनाक है, जो बीमारियों को अपने मुनाफे के लिए बेचती हों

हास-परिहास का विषय नहीं गंभीर बीमारियां। फाइल

इससे साफ होता है कि ग्लैमर की दुनिया कितने झूठ पर अपने महल बनाती है। इसके लिए वह तनिक शर्माती भी नहीं। अभी कुछ दिन पहले इंटरनेट मीडिया पर अमिताभ बच्चन के परिवार में झगड़े की खबरें खूब छाई हुई थीं। कहा जा रहा था कि अमिताभ बच्चन ने अपना एक बंगला बेटी श्वेता को दे दिया है इसलिए बहू ऐश्वर्य राय नाराज हैं। वह घर छोड़कर चली गई हैं और अभिषेक बच्चन को तलाक देना चाहती हैं। जबकि इन बातों में कोई सच्चाई बाद में साबित नहीं हो सकी। ऐसी खबरें क्यों फैलाई गईं? अभी तक सच पता नहीं चल सका है। पिछली सदी के नौवें और अंतिम दशक में फिल्मों को हिट कराने के लिए उनमें साथ काम करने वाले अभिनेता-अभिनेत्रियों के बीच प्रेम प्रसंग की झूठी खबरें खूब छपवाई जाती थीं। तब अभिनेत्रियां अपने वास्तविक प्रेम प्रसंगों को भी छिपाती थीं, क्योंकि उन्हें बताया जाता था कि उनके संबंधों के बारे में जैसे ही पता चलेगा, लोग उन्हें पसंद करना बंद कर देंगे, क्योंकि वे पुरुषों के मन में कामनाएं जगाती हैं। अभिनेता भी ऐसा करते थे। बताया जाता है कि अपनी पहली फिल्म 'कयामत से कयामत तक' की रिलीज से पहले ही आमिर खान विवाह कर चुके थे, लेकिन इस बात को उन्होंने बहुत दिनों तक छिपाए रखा था। जबकि बाद के दिनों में बिपाशा बसु या करीना कपूर जैसी अभिनेत्रियां खुलेआम अपने लिव इन रिलेशनशिप के बारे में बातें करने लगीं, क्योंकि तब लिव इन बिक रहा था। आपको मधुर भंडारकर की 'हीरोइन' फिल्म याद होगी, जिसमें उम्रदराज होती जाती एक हीरोइन को मार्केटिंग एजेंसी वाली कहती है कि तुम्हारे पास बेचने को क्या है। फिर वह हीरोइन अपने रति प्रसंगों का वीडियो वायरल करा देती है और फिल्म हिट हो जाती है।

अब ये सारी बातें पुरानी पड़ चुकी हैं। मार्केटिंग जैसे भस्मासुर को हर वक्त कुछ नया चाहिए जिससे कि लोगों में खलबली मचाई जा सके और फिल्मों को हिट कराया जा सके। इसीलिए अब नया सोच यह हो चला है कि अपनी किसी बीमारी के बारे में बात की जाए। वह कोई गंभीर बीमारी होनी चाहिए जिससे कि लोग सहानुभूतिवश टिकट खिड़की पर टूट पड़ें। कुल मिलाकर झूठ बोलकर पैसा बनाया जा रहा है। ये प्रवृत्तियां सिर्फ समाज के लिए ही घातक नहीं हैं, बल्कि उनके लिए भी घातक हैं जो इस तरह के जाल में फंसते हैं। पूनम पांडे भी इसी का अनुसरण कर रही हैं। पूनम पांडे अगर वास्तव में औरतों की हितैषी हैं और जागरूकता बढ़ाना चाहती हैं तो इसके लिए वह जागरूकता अभियान चला सकती थीं। दूरदराज के इलाकों में कार्यशाला आयोजित कर सकती थीं। सरकारों से मांग कर सकती थीं कि शहरों और गांवों के अस्पतालों में इस तरह के रोगों की जांच के लिए पर्याप्त व्यवस्था करें। रोग का इलाज सस्ता हो। अभी तो कैंसर का इलाज इतना महंगा है कि आम लोगों की पहुंच से बहुत दूर है, लेकिन लगता है ग्लैमर की दुनिया को इन बातों से कोई खास मतलब नहीं है सिवाय अपने स्वार्थ के। अपनी मौत की खबर फैलाना और अगले दिन ही प्रकट हो जाना मानसिक रोग के ही लक्षण हैं। पूनम पांडे जैसों की ऐसी झूठी सहानुभूति इस देश की महिलाओं को नहीं चाहिए। उन पर कृपा करें। वैसे ही उनके जीवन में कोई कम मुश्किलें नहीं हैं।

(लेखिका साहित्यकार हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

आध्यात्मिक ज्ञान

इस दुनिया में कुछ भी चीज अकारण नहीं है। प्रत्येक अवस्था में कारण और प्रभाव उपस्थित रहता है। जब हम कोई भी काम विवेक के अनुसार तर्क के आधार पर करते हैं, उसी समय कारण और प्रभाव की ओर भी आकर्षित हो जाते हैं। हम किसी चीज को देखकर पता लगा सकते हैं कि कारण क्या है? जैसे हम चीनी देखते हैं, यहां चीनी का कारण तत्व क्या है? चीनी का कारण तत्व गन्ना है। गन्ना कारण है तो चीनी वहां प्रभाव तत्व है। जब गन्ना प्रभाव तत्व है तो बीज कारण तत्व है। इसीलिए जीवन के हरेक क्षेत्र में कारण तत्व है। जो विवेकशीलता पर आधारित हो और कारण और प्रभाव तत्व पर भी ध्यान रखता हो, वह विज्ञान कहलाता है।

महर्षि कणाद ने कहा था कि जहां कारण तत्व नहीं है, वहां प्रभाव तत्व नहीं हो सकता। आध्यात्मिक साधना का अभ्यास विज्ञान के दायरे में आता है। अध्यात्म स्वयं को जानने का मार्ग है। सभी प्राणियों में कमोबेश ज्ञान होता है, पर उनमें अंतर्ज्ञान का अभाव होता है। मनुष्य में तो ज्ञान और अंतर्ज्ञान, दोनों हैं। मनुष्य ही प्रकृति का एक ऐसा जीव है, जिसके मस्तिष्क के कुछ भाग चेतन और कुछ भाग अचेतन अवस्था में होते है। वहीं पर उसकी सारी क्षमताएं होती हैं।

एक बार माता पार्वती ने भगवान सदाशिव से पूछा कि कोई कैसे जान और अनुभव कर सकता है कि भक्ति एकमात्र पथ है। इस पर भगवान सदाशिव ने कहा कि जब कोई व्यक्ति अपनी सभी संभव क्षमताओं को विकसित करने के लिए स्वयं को परमपुरुष में समर्पित कर देता है, तब वह उसको भक्त बनाता है। इसी अवस्था को भक्ति कहा जाता है। जब मन की चेतना बाह्य जगत से निकलकर आंतरिक जगत में परिवर्तित हो जाती है, वही वास्तविक ज्ञान है, वही आत्म बोध है। यहां बाह्य ज्ञान का कोई स्थान नहीं है।

श्री श्री आनंदमूर्ति

अजन्मे शिशु का अधिकार

सुनीता मिश्रा

भले ही अजन्मे शिशु को कानूनी तौर पर व्यक्ति नहीं माना जा सकता, लेकिन उसे जीवन के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसमें जान है

पिछले दिनों दिल्ली हाई कोर्ट ने 28 सप्ताह की गर्भवती अविवाहित महिला को गर्भपात की इजाजत देने से इन्कार कर दिया। कोर्ट ने कहा कि भ्रूण पूर्ण रूप से विकसित है। गर्भस्थ भ्रूण में कोई असामान्यता नहीं है और न ही महिला को गर्भ जारी रखने में कोई खतरा है इसलिए भ्रूण हत्या न तो नैतिक होगी और न ही कानूनी रूप से स्वीकार्य होगी। 20 वर्षीय अविवाहित महिला ने अपनी याचिका में दावा किया था कि वह सहमति से बनाए गए संबंधों की वजह से गर्भवती हुई है।

मेडिकल टर्मिनेशन आफ प्रेग्नेंसी (संशोधन) एक्ट 2021 के अनुसार, गर्भवती महिला 24 हफ्ते तक गर्भपात करा सकती है। एक्ट में 24 हफ्ते से अधिक का गर्भ गिराने की अनुमति सिर्फ विशेष परिस्थितियों में दी गई है। जैसे यौन उत्पीड़न, दुष्कर्म, नाबालिग या गर्भावस्था के दौरान वैवाहिक स्थिति में बदलाव (विधवा और तलाक), दिव्यांग और मानसिक रूप से बीमार महिलाओं को गर्भपात की अनुमति है। साथ ही वे महिलाएं भी गर्भपात करा सकती हैं, जिनके गर्भ में पल रहे भ्रूण में विकृति हो। यह प्रत्येक महिला का व्यक्तिगत मामला है कि वह गर्भधारण करे या नहीं। संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत उसे गरिमा के साथ जीवन जीने और निजता का अधिकार मिला है। इसको ध्यान में रखते हुए वर्ष 2010 में सुप्रीम कोर्ट ने लिव इन रिलेशनशिप को मान्यता दी थी। इससे अगर कोई अविवाहित महिला लिव इन रिलेशनशिप के दौरान सहमति से बनाए गए रिश्ते से गर्भवती हुई है और व्यक्तिगत कारणों से अपने रिश्ते को आगे नहीं बढ़ाना चाहती है तो वह भी 24वें हफ्ते में गर्भपात कराने की हकदार है, लेकिन अगर कोई अविवाहित महिला 24 सप्ताह से ऊपर यानी 28 सप्ताह या इससे आगे के सप्ताह में गर्भपात कराने का निर्णय लेती है तो यह कानूनी रूप से अस्वीकार्य होगा, क्योंकि इस समय गर्भ में पल रहे शिशु के जीने की उम्मीद बढ़ जाती है।

भले ही भ्रूण या अजन्मे शिशु को कानूनी तौर पर व्यक्ति नहीं माना जा सकता, लेकिन उसे जीवन के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसमें जान है। गर्भावस्था के पांचवें सप्ताह में भ्रूण का दिल धड़कना शुरू कर देता है। वर्ल्ड मेडिकल एसोसिएशन के मुताबिक किसी व्यक्ति का अस्तित्व तभी से शुरू हो जाता है, जब वह गर्भ में आता है और मौत के साथ खत्म होता है। इसीलिए गर्भपात की इजाजत तभी दी जाती है, जब गर्भवती महिला की जान को खतरा हो, भ्रूण किसी गंभीर बीमारी की चपेट में हो या फिर उसमें कोई विसंगति हो। कुल मिलाकर हाई कोर्ट ने गर्भ में पल रहे शिशु को दुनिया में आने की इजाजत देकर समाज को महत्वपूर्ण संदेश दिया है।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

केंद्रीय जांच एजेंसियों की तत्परता

'रंग लाएगा भ्रष्टाचार विरोधी अभियान' शीर्षक से लिखे अपने आलेख में सुरेंद्र किशोर ने कहा है कि चूंकि जनता भ्रष्टाचार के विरुद्ध जारी अभियान पर विराम लगते नहीं देखना चाहती, इसलिए यदि मोदी सरकार और बड़े बहुमत के साथ सत्ता में आए तो हैरानी नहीं। इसमें दोराय नहीं कि आज भारत का हर नागरिक भ्रष्टाचार मुक्त देश चाहता है। हम इन दिनों देख भी रहे हैं कि देश की केंद्रीय जांच एजेंसियां घोटालों को उजागर करने में एड़ी-चोटी का जोर लगा रही हैं, परंतु लगता है कि इन जांच एजेंसियों का ज्यादातर ध्यान सिर्फ गैर-भाजपा शासित राज्यों पर ही है। गैर-भाजपा शासित राज्यों में अगर घोटाले का कोई आरोप सामने आता भी है तो सभी जांच एजेंसियां वहां के मंत्रियों और मुख्यमंत्री को समन देती हैं। उन्हें गिरफ्तार भी कर लेती हैं, परंतु जब किसी घोटाले की खबर भाजपा शासित राज्यों से उजागर होती है तो वहां पर ये जांच एजेंसियां नहीं दिखती हैं। जांच एजेंसियां अगर सभी राज्यों में सामने आ रहे घोटाले के आरोपों में समान रूप से जांच करती हैं तो लोगों का उन पर विश्वास बना रहेगा।

sandeep.sonak@gmail.com

पांच विभूतियों को सम्मान

'भारत के तीन और रत्न' शीर्षक से लिखे आलेख में केसी त्यागी ने भारत सरकार के निर्णय की प्रशंसा की है। बताया कि भारत रत्न से उन व्यक्तियों को सम्मानित किया जाता है, जिनका किसी न किसी रूप में राष्ट्र की प्रगति में अहम योगदान रहता है। इस बार

मेलबाक्स

जिन पांच विभूतियों को भारत रत्न से सम्मानित किया गया है निःसंदेह उनमें चार की गिनती धुर राजनीतिज्ञों में होगी, सिवाय एमएस स्वामीनाथन को छोड़कर। इस नाते विभिन्न राजनीतिक विचारधारा से ताल्लुक रखने वालों की ओर से यह राजनीतिक मांग उठने लगी है कि उनके नेताओं को भी भारत रत्न दिया जाना चाहिए। जैसे मोदी सरकार ने इसे देने में राजनीतिक लाभ का ध्यान रखा हो। सवाल है कि यह ध्यान संप्रग सरकार ने क्यों नहीं दिया? बहरहाल यह तय है कि देश में ऐसे स्वाधीनता सेनानियों जिन्होंने आजादी बाद विभिन्न राजनीतिक पदों को संभाले हैं, की कमी नहीं है, जिनका अपने राज्य के विकास में अप्रतिम योगदान रहा है, लेकिन शायद उनको भारत रत्न देने की मांग इसलिए नहीं हो रही है कि वे राष्ट्रीय स्तर पर वोट बैंक को प्रभावित करने में उतने असरकारी नहीं हैं। इसका यह कतई मतलब नहीं है कि जिन्हें यह सम्मान मिला है उनका योगदान किसी से कमतर है, बल्कि असाधारण है, पर चुनावी बेला में इस पर राजनीतिक रंग चढ़ना बेजा नहीं है।

mukeshkr.m7542@gmail.com

टूटते गठबंधन से कमजोर होती कांग्रेस

'स्याह भविष्य की ओर कांग्रेस' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में संजय गुप्त का यह आकलन बिल्कुल सही है कि कांग्रेस भाजपा को चुनौती देने का चाहे जितना दम भरे, सच यह है कि वह न तो अपना दम-खम दिखा पा रही है और न ही आइएनडीआइए का। कांग्रेस सहित अन्य मोदी विरोधी विपक्षी दलों ने जिस जोश के साथ महागठबंधन बना कर उसका नाम आइएनडीआइए रखा था, उससे लगने लगा था कि अबकी बार विपक्षी दलों का यह गठबंधन भाजपा को अच्छी टक्कर देगा, लेकिन भाजपा की कूटनीति से अवसरवादी राजनीतिक दलों ने एक-एक कर इस गठबंधन से किनारा करना शुरू कर दिया। इनमें से कुछ ने तो भाजपा के एनडीए गठबंधन में शामिल होकर अपनी डूबती नैया को बचा लिया तो कुछ ने स्वयं की लाभ-हानि का गुणा-भाग करके अकेले ही चुनावी समर में उतरने का फैसला ले लिया। कुछ दल प्रधानमंत्री मोदी की नीतिगत सदाशयता से प्रभावित होकर स्वयं ही एनडीए के पाले में आने को तैयार दिख रहे हैं। ऐसे में सांसत में फंसी कांग्रेस को कुछ सूझ नहीं रहा कि आखिर वह करे तो क्या करे। मोदी सरकार के श्वेत पत्र ने कांग्रेस की बची-खुची साख पर भी बट्टा लगा दिया। खिसियानी कांग्रेस श्वेत पत्र के मुकाबले स्याह पत्र लेकर आ गई।

डा. वीपी पाडेय, अलीगढ़

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए; नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

80 प्रतिशत हेरोइन उत्पादन होता है केवल म्यांमार में दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों की तुलना में, अमेरिकी ड्रग एनफोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार। साथ ही हेरोइन की वैश्विक आपूर्ति के 60 प्रतिशत के लिए केवल म्यांमार जिम्मेदार है।

विवेक ओझा
अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार

भारत-म्यांमार सीमा

मुक्त आवाजाही व्यवस्था समाप्त

भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण द्विपक्षीय संबंध बनाए रखने पर जोर देता है। परंतु राष्ट्रीय सुरक्षा और हितों से किसी भी हाल में समझौता नहीं किया जा सकता है। इसलिए भारत ने म्यांमार से पूर्वोत्तर में आने वाले अवैध शरणार्थियों, विद्रोहियों, षड्यंत्रकारियों के आवागमन पर रोक लगाने के लिए 'मुक्त आवागमन व्यवस्था' को हटा दिया है, ताकि पूर्वोत्तर की शांति, सुरक्षा और स्थिरता कायम रहे

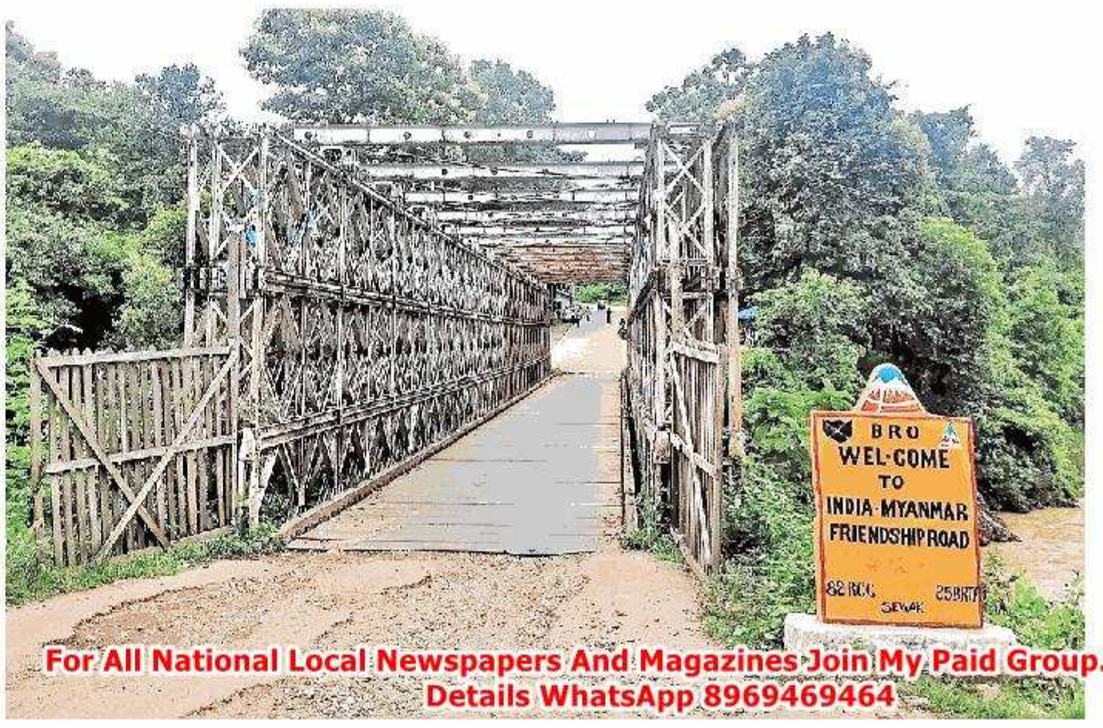

For All National Local Newspapers And Magazines Join My Paid Group.
Details WhatsApp 8969469464

भारत-म्यांमार के बीच एक समझौता है जिसके तहत दोनों देशों की जनजातियों को 16 किमी तक दोनों ओर बिना वीजा आने-जाने की सुविधा है। फाइल

रॉबर्ट फ्रास्ट नामक एक चिंतक ने ठीक ही कहा था, 'गुड फेंसेज मेक गुड नेबर' जो यह इंगित करता है कि बेहतर बाड़बंदी से बेहतर पड़ोसी बनाए जा सकते हैं। यह बात भारत और म्यांमार सीमा के बारे में सटीक बैठती है। इसी को ध्यान में रखकर केंद्र सरकार ने भारत और म्यांमार के बीच मुक्त आवागमन व्यवस्था को खत्म करने का निर्णय लिया है। ऐसा निर्णय लेने के बारे में पिछले कुछ वर्षों से सोचा जा रहा था, लेकिन केंद्र सरकार ऐसा कोई कदम हड़बड़ी में नहीं उठाना चाहती थी जिससे भारत म्यांमार संबंध जो पहले से ही संवेदनशील रहे हैं, उस पर कोई नकारात्मक असर पड़े। लेकिन जब केंद्र सरकार ने यह जान लिया कि म्यांमार से अवैध तरीके से पूर्वोत्तर भारत में आने वाले शरणार्थी पूर्वोत्तर की शांति सुरक्षा के लिए खतरा बनते जा रहे हैं, तब सरकार ने यह कठोर निर्णय लिया है।

वस्तुतः भारत म्यांमार की 1,643 किमी लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा में से अधिकांश की बाड़बंदी नही हुई है और मणिपुर जो म्यांमार से लगभग 390 किमी लंबी सीमा साझा करता है उसकी तो केवल 10 किमी की सीमा पर फेंसिंग हुई है। चूंकि म्यांमार विश्व का सबसे बड़ा अफीम उत्पादक देश बन गया है, लिहाजा भारत में अवैध ड्रग्स की तस्करी एक बड़ी समस्या बनी है। वहीं रोहिंग्या, कुकी, चिन जैसे एथनिक समुदाय अवैध तरीके से नार्थईस्ट में प्रवेश कर रहे हैं जिससे वहां की डेमोग्राफी में बदलाव की आशंका है। इसलिए जरूरी था कि जिस मकसद के लिए भारत म्यांमार के बीच फ्री मूवमेंट रेजीम की व्यवस्था की गई थी यदि वह उस उद्देश्य को पूरा न कर भारत के आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौती बनता है, तो उसे खत्म किया जाए।

भारत सरकार ने दोनों देशों के आम स्थानीय जनजातियों की मुक्त आवाजाही की व्यवस्था की थी, ताकि व्यक्ति से व्यक्ति के बीच संपर्क बढ़े, सांस्कृतिक विनिमय को मजबूती मिले जिससे आपसी विश्वास दोनों देशों में बढ़े। भारत सरकार ने फ्री मूवमेंट रेजीम की व्यवस्था इसलिए नहीं दी थी कि म्यांमार के अराजक तत्व पूर्वोत्तर भारत में अलगाववादी आंदोलन का षड्यंत्र रचने आ जाएं, पूर्वोत्तर के लोगों को भारत सरकार के खिलाफ विद्रोही गतिविधियां करने के लिए भड़का सकें, पूर्वोत्तर को हथियार, ड्रग्स, गोल्ड आदि चीजों की अवैध तस्करी करने का जरिया समझने लगें। भारत सरकार ने तो अंतरराष्ट्रीय सीमा पर हाट खोलकर स्थानीय लोगों की आजीविका के संरक्षण का मानवीय कार्य किया है। कहने का आशय यह है कि वैश्वीकरण के दौर में मुक्त आवाजाही पर बेवजह रोक लगाने की सोच भारत जैसा उदारवादी देश तो कतई नहीं रखता, लेकिन अपनी राष्ट्रीय आंतरिक सुरक्षा के लिए उसे कई कठोर फैसले करने होते हैं।

अमेरिकी ड्रग एनफोर्समेंट के अनुसार, म्यांमार दक्षिण पूर्वी एशिया का 80 प्रतिशत हेरोइन उत्पादन करता है और वैश्विक आपूर्ति के 60 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार है। कोकीन की तस्करी के लिए भी यह जिम्मेदार है। चीन और म्यांमार के ड्रगलाड्र्स को एक दूसरे का सहयोग समर्थन समय समय पर मिलता रहा है, लेकिन सर्वाधिक चिंता की बात यह है कि भारत म्यांमार की सीमा पर कई हेरोइन लैब्स सक्रिय हैं। मिजोरम में म्यांमार के रास्ते से एंफेटामाइन, याबा टैबलेट्स, क्रेजी ड्रग्स, पार्टी ड्रग्स की तस्करी और अवैध खरीद फरोख्त भी काफी बढ़ चुकी है जो उत्तर पूर्वी भारत के युवा मानव संसाधन को क्षति पहुंचा रही है।

मुक्त आवागमन व्यवस्था : भारत म्यांमार के बीच मुक्त आवागमन व्यवस्था को 2018 में लाया गया था। मिजोरम, मणिपुर, नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश से होकर गुजरने वाली 1,643 किलोमीटर लंबी भारत-म्यांमार सीमा पर एफएमआर की व्यवस्था रही है। इसे 2018 में भारत की एक्ट ईस्ट पालिसी के हिस्से के रूप में लागू किया गया था, ताकि लोकल बार्डर ट्रेड को सुनिश्चित किया जा सके और बार्डर रेजिडेंट्स को शिक्षा तथा हेल्थकेयर तक पहुंच में सुधार हो सके। इस प्रणाली के इस लाभ के बारे में भी भारत सरकार ने सोचा था कि इससे दोनों देशों के कूटनीतिक व सामरिक संबंधों में भी मजबूती आई थी।

मुक्त आवागमन व्यवस्था दोनों देशों के बीच एक समझौता है जो दोनों तरफ सीमा पर रहने वाली जनजातियों को दूसरे देश के अंदर 16 किमी तक बिना किसी वीजा यात्रा करने की अनुमति देता है। यह दोनों पक्षों के समुदायों को सक्षम अधिकारियों द्वारा जारी सीमा पास (एक वर्ष की वैधता) दिखाने पर, वैध परमिट के साथ 72 घंटे तक रहने की अनुमति देता है। आतंकवादियों और कई अपराधी जबसे इस फ्री मूवमेंट रेजीम का दुरुपयोग करने लगे, तबसे मोदी सरकार विवश है कि इसके बारे में कुछ ठोस निर्णय लिया जाए। मुक्त आवागमन व्यवस्था का गलत इस्तेमाल म्यांमार की तरफ से हथियारों, नशीले पदार्थों, तस्करी के सामानों और नकली भारतीय रुपये के नोटों की तस्करी के रूप में करने के कई प्रमाण असम राइफल्स पहले ही दे चुका है। जबसे म्यांमार में कुकी-चिन समुदाय पर सरकार की कार्रवाई हो रही है, तबसे मुक्त आवागमन व्यवस्था का उपयोग अवैध प्रवास के लिए किया जा रहा है।

फरवरी 2021 में म्यांमार में सैन्य तख्तापलट के बाद से अनुमान है कि 40 हजार से अधिक शरणार्थियों ने मिजोरम में शरण ली है और लगभग चार हजार शरणार्थियों ने मणिपुर में। ऐसे प्रवासियों की पहचान के लिए मणिपुर सरकार द्वारा गठित एक पैनल ने उनकी संख्या 2,187 आंकी गई है। वर्ष 2023 में मणिपुर सरकार ने आरोप लगाया कि ग्राम प्रधान अवैध रूप से म्यांमार के प्रवासियों को पहाड़ियों के नए गांवों में बसा रहे हैं, जिससे वनों की कटाई हो रही है और इसी आधार पर मणिपुर सरकार ने फ्री मूवमेंट रेजीम की समीक्षा करने की अपील केंद्र से की थी।

भारत म्यांमार बार्डर पर म्यांमार के विद्रोहियों के वहां के मिलिट्री जुंटा की पुलिस ठिकानों पर लगातार हमले के बाद से 74 से अधिक म्यांमारी सैनिक पूर्वोत्तर भारत में आ गए थे। इससे पूर्व म्यांमार के 29 सैनिक पिछले साल 16 नवंबर को मिजोरम में प्रवेश कर गए और फिर इन सैनिकों को भारत के प्रतिरक्षा प्राधिकारियों ने मणिपुर के मोरेह एयरलिफ्ट किया था। इन सब संदर्भों को ध्यान में रखकर फ्री मूवमेंट को रेगुलेट करना आवश्यक हो गया था। एक तरफ भारत सरकार नार्थईस्ट के संदर्भ में नेपाल, बांग्लादेश, भूटान और म्यांमार के साथ कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट पर आगे बढ़ रही है। रेल, रोड, जलमार्ग से कनेक्टिविटी बढ़ाकर पूर्वोत्तर के विकास का प्रयास किया जा रहा है, वहीं इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट, बार्डर फेंसिंग जैसी बातों पर ध्यान देकर सुरक्षा तंत्र से भी कोई समझौता न करने की प्रतिबद्धता दिखाई गई है।

घुसपैठ पर नकेल का सार्थक प्रयास

प्रमोद भार्गव

म्यांमार भारत का मित्र देश है, इसलिए उसके साथ 2018 में भारत की पूर्वोत्तर नीति के अंतर्गत फ्री मूवमेंट रिजीम यानी मुक्त आवागमन की सुविधा लागू की गई थी। यह दो देशों के बीच पारस्परिक सहमति से चलने वाली व्यवस्था थी, लेकिन इसकी आड़ में उग्रवादी और घुसपैठिये भारतीय सीमा में दाखिल होने लग गए। क्योंकि सुविधा की शर्त के मुताबिक, दोनों देशों के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों को 16 किमी तक भारतीय सीमा के चार राज्यों- मिजोरम, मणिपुर, नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश में आने-जाने की छूट थी। यह उपाय इस दृष्टि से किया गया था, जिससे एकरूपता वाली जनजाति समुदायों में सांस्कृतिक मेल-मिलाप बना रहे। यह सुविधा भी वैध वीजा के आधार पर महज 72 घंटे की थी। एक समय ब्रह्मदेश के नाम से जाना जाने वाला म्यांमार अखंड भारत का ही भूभाग था। लेकिन म्यांमार में 2021 में सैन्य तख्तापलट के बाद हजारों की संख्या में शरणार्थी म्यांमार से भागकर भारत पहुंचे हैं। ड्रग तस्करी और हथियारों की सप्लाई भी म्यांमार सीमा से हो रही है। यही वजह है कि सरकार ने मुक्त आवागमन व्यवस्था को रद्द करने का फैसला किया है। हालांकि म्यांमार की सेना ने 2017 में जब विद्रोहियों का दमन किया था, तभी से रोहिंग्या मुस्लिमों की घुसपैठ पूर्वोत्तर के सातों राज्यों के साथ पश्चिम बंगाल में भी बनी हुई है। इन घुसपैठियों ने इन राज्यों का जनसंख्यात्मक घनत्व भी बिगाड़ने का काम किया है, जो संकट के साथ स्थानीय जनजातियों के अस्तित्व का खतरा बन रहा है। इन विद्रोहियों को पकड़ने बहाने म्यांमार के सैनिक भी भारतीय सीमा में बड़ी संख्या में घुसे चले आते हैं। लिहाजा इस सुविधा को समाप्त करना देशहित में आवश्यक था।

म्यांमार में दमन के बाद लगभग एक दशक में रोहिंग्या मुस्लिम भारत, नेपाल, बांग्लादेश, थाइलैंड, इंडोनेशिया, पाकिस्तान समेत 18 देशों में पहुंचे हैं। ये रोहिंग्या किस हद तक खतरनाक साबित हो रहे हैं, इसका राजफाश अनेक रिपोर्ट में हो चुका है। जबकि मानवाधिकार संगठन एमनेस्टी इंटरनेशनल ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि म्यांमार से पलायन कर भारत में शरणार्थी बने रोहिंग्या मुसलमानों में से अनेक ऐसे हो सकते हैं, जिन्होंने म्यांमार के अशांत रखाइन प्रांत में हिंदुओं का नरसंहार किया है। रोहिंग्या आतंकियों ने अगस्त 2017 में रखाइन में पुलिस चौकियों के साथ म्यांमार के बौद्ध और हिंदुओं पर कई जानलेवा हमले किए थे। इस हमले में हजारों बौद्ध और हिंदू मारे गए थे। नतीजतन म्यांमार सेना ने व्यापक स्तर पर आतंकियों के खिलाफ अभियान चलाया। जिसके परिणामस्वरूप करीब 15 लाख रोहिंग्याओं को पलायन करना पड़ा। इनमें से 40 हजार से भी ज्यादा भारत में घुसपैठ करके शरण पाने में सफल हो गए, जबकि शेष बांग्लादेश, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, थाइलैंड और नेपाल चले गए थे। लिहाजा केंद्र सरकार को चाहिए कि इन रोहिंग्याओं से देश को बचाने की पुख्ता व्यवस्था करे। (लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

खरी-खरी

मैं भी उल्लू हूं...

गोविंद भारद्वाज

इन दिनों उल्लुओं को इस बात की गलतफहमी हो गई कि केवल वे ही उल्लू हैं इस दुनिया में। उनके अलावा कोई और उल्लू नहीं हो सकता। लिहाजा मैं उनके अड्डे पर गया। अड्डा शब्द सुनकर चौंकना मत। आजकल सभी के अड्डे होते हैं। हर अड्डे का एक भाई अर्थात डान होता है। मैंने डान से मिलने के लिए अपना नाम लिखकर भिजवाया- उल्लू भाई। उसने चिल्लाकर कहा, 'इस धरती पर हमारे अलावा कोई उल्लू नहीं हो सकता।' जैसे-तैसे उस डान ने मुझे अपने अड्डे पर बुलवाया।

''आप हैं उल्लू भाई?'' डान ने पूछा। 'जी भाई, मैं भी आपकी बिरादरी का उल्लू हूं।' मैंने दूर से ही कहा। वह गुस्से में बोला, 'तुम उल्लू हो, किसी भी एंगल से उल्लू नहीं दिखाई दे रहे। तुम तो चौबीस कैरेट आदमी हो। हां इतना जरूर है कि लोग आजकल उल्लू के पट्ठे जरूर हो गए। तुम पट्ठे हो या सचमुच के उल्लू हो?'

'उल्लू भाई, मैं बिल्कुल शुद्ध आतदचारी उल्लू हूं। देखो आपको देखकर सब लोग उल्लू कहकर बुलाते हैं। उसी तरह मुझे भी सब उल्लू कहकर ही बुलाते हैं। पहले बाबूजी कहते थे, फिर स्कूल में गुरुजी और अब बीवी भी उल्लू कहकर बुलाती है।' मैंने तुलनात्मक अध्ययन करते हुए कहा।

'अरे, उल्लू कहने से कोई उल्लू हो जाता है क्या? उल्लू तो तुम नेताओं को भी कहते हो, क्या वे उल्लू हो गए।'' डान ने कहा।

मैंने कहा, 'नेताओं की बात मत पूछिए। उन्हें कोई गधा कहता है, तो कोई डाकू। नेता अपनी बात पर कभी अडिग नहीं रहते, इसलिए उन्हें अनेक नामों से जाना जाता है। आजकल वे गिरगिट बने हुए हैं। मैं आपकी तरह लक्ष्मी का वाहन हूं।''

''तुम लक्ष्मी के वाहन, कहीं पगला तो नहीं गए हो? लक्ष्मी के वाहन तो हम हैं।' उल्लू डान ने दादागिरी करते हुए कहा।

मैंने सफाई देते हुए कहा, 'बीवी घर की लक्ष्मी होती है उल्लू भाई। मैं उसको कब से ढो रहा हूं। ढोने वाला वाहन ही तो होता है।'

मेरी दर्द भरी व्यथा सुनकर उस उल्लू ने मुझे गले से लगा लिया और महाउल्लू की पदवी देते हुए अपनी जमात में शामिल कर लिया।

पोस्ट

प्रगति मैदान सुरंग से लेकर सेंट्रल विस्टा तक के निर्माण में सामने आ रहीं तमाम खामियां मौजूदा शासन की नाकामियों का जीवंत दस्तावेज हैं।

अभिषेक सिंघवी@DrAMSinghvi

प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ जहर उगलने का फायदा तो बहुत है। चाहे पद से हो या पैसे से। लोगों को यूट्यूब पर भी लाखों की कमाई होती है और जनता को धोखा दिया जाता है कि हम तो 'निष्पक्ष' हैं।

ऋचा अनिरुद्ध@richaanirudh

कांग्रेस ने आचार्य प्रमोद कृष्णम को मोदी जी की तारीफ करने के कारण तुरंत पार्टी से बाहर निकाल दिया, लेकिन देश के दो टुकड़े करने की बात करने वाले डीके सुरेश को एक नोटिस तक नहीं जारी किया। यह है कांग्रेस पार्टी का असली चेहरा।

कपिल मिश्रा@KapilMishra_IND

बंगाल में आइएनडीआइए छिन्न-भिन्न हो गया है। उत्तर प्रदेश में भी स्थिति बहुत अनिश्चित है। पंजाब और दिल्ली में भी ऐसा ही है, लेकिन यदि इस गठबंधन के नेताओं से सवाल पूछें तो उलटे आप पर ही हमले शुरू हो जाते हैं और इंटरनेट मीडिया पर ट्रोल किया जाता है।

पल्लवी घोष@_pallavighosh

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या आपातकाल में संविधान की प्रस्तावना में जोड़े गए समाजवादी और सेक्युलरिज्म शब्दों को हटाया जाना चाहिए?

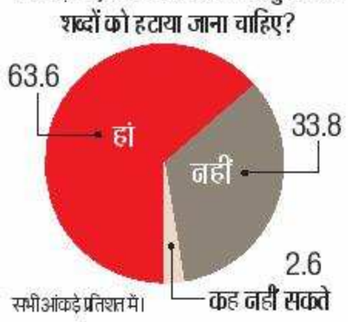

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या आपको लगता है कि प्रमुख दलों की राष्ट्रीय सरकार पाकिस्तान का भला कर सकती है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

बैठे-बैठे जेल में दिया यार्कर फेंक,
लगा नवाज शरीफ की गति पर बढ़िया ब्रेक।
गति पर बढ़िया ब्रेक चलाना मुश्किल गाड़ी,
सचमुच में इमरान मियां जाँबाज खिलाड़ी।
फौज प्रमुख श्रीमान रहे जो ऐंठे-ऐंठे,
एलबीडब्ल्यू आज हो गए बैठे-बैठे!

- ओमप्रकाश तिवारी

अजय जायसवाल
राज्य ब्यूरो प्रमुख, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश डायरी

'क्लीन स्वीप' की ओर एनडीए के बढ़ते कदम

उत्तर प्रदेश में भी विपक्षी मोर्चे आइएनडीआइए की गांठ और ढीली होती जा रही है। सबसे ज्यादा 80 लोकसभा सीटों वाले इस प्रदेश में मुख्य विपक्षी घटक समाजवादी पार्टी, कांग्रेस और राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) की जुगलबंदी से चुनाव में इतिहास बदलने का दावा किया जा रहा था, लेकिन चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न की घोषणा के बाद रालोद अध्यक्ष जयन्त चौधरी के बदले रुख और कांग्रेस के अभी पत्ते न खोलने से गठबंधन की गांठे उभरकर सामने हैं। रालोद अध्यक्ष जयन्त चौधरी से छह साल पुराना साथ छूटने को सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है। खासतौर से पश्चिमी उत्तर प्रदेश की जाट बेल्ट से अखिलेश की उम्मीदों पर पानी फिरता नजर आ रहा है। बसपा के दूर रहने से विपक्षी गठबंधन पहले ही कमजोर था, अब रालोद सहित कई और छोटे दलों के भाजपा संग होने से राज्य में एनडीए के कदम 'मिशन क्लीन स्वीप' की ओर बढ़ते दिख रहे हैं।

वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में रालोद, सपा और बसपा के साथ गठबंधन कर चुनाव में उतरी थी। तब रालोद का तो खाता नहीं खुला था, लेकिन बसपा 10, सपा पांच और कांग्रेस एक सीट जीतने में कामयाब रही थी। 80 सीटों में से भाजपा को 62 और एनडीए में शामिल अपना दल (एस) को दो सीटों पर सफलता मिली थी। इससे पहले 2014 के मोदीमय माहौल में हुए संसदीय चुनाव में भाजपा सहयोगी दलों संग 73 लोकसभा सीटें जीती थी। केंद्र में मोदी सरकार की हैट्रिक के लिए 'अबकी बार 400 पार' के एनडीए के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रही भाजपा की पैनी नजर इस बार राज्य की सभी 80 सीटों पर है।

जयन्त चौधरी। फाइल

दरअसल, बसपा प्रमुख मायावती के सपा, कांग्रेस व रालोद के आइएनडीआइए से दूर रहने के बावजूद चुनौतियां कम नहीं हो रही थीं। भाजपा रामपुर व आजमगढ़ जैसी मुस्लिम बहुल लोकसभा सीटों के उपचुनाव में तो भगवा परचम फहराने में कामयाब रही, लेकिन पिछले चुनाव में हारी 14 अन्य सीटों में से पूर्वी व पश्चिमी उत्तर प्रदेश की कई सीटों पर आइएनडीआइए के चलते इस बार भी जीत के समीकरण फिट नहीं बैठ रहे थे। सपा, रालोद-कांग्रेस के साथ मिलकर जाट, यादव व मुस्लिम मतों की बदौलत पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भाजपा को न केवल बिजनौर, नगीना, सहारनपुर, अमरोहा, संभल, मुरादाबाद जैसी हारी, बल्कि कई जीती सीटों पर भी बड़ी चुनौती दे रही थी। विदित हो कि वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा के साथ गठबंधन में रालोद ने आठ सीटों पर सफलता हासिल की थी।

सपा-रालोद गठबंधन के असर को कम करने के लिए ही भाजपा ने विधानसभा चुनाव के बाद जाट बिरादरी के भूपेन्द्र सिंह चौधरी को प्रदेश अध्यक्ष बनाया, लेकिन मुजफ्फरनगर की खतौली विधानसभा सीट के उपचुनाव में भाजपा, रालोद को शिकस्त नहीं दे सकी।

अब लोकसभा चुनाव से ठीक पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को 'भारत रत्न' सम्मान देने की घोषणा कर जिस तरह से उनके पोते जयन्त का 'दिल जीता' उससे अखिलेश के वर्षों पुराने साथी जयन्त अब एनडीए का हिस्सा बनने को भी तैयार बैठे हैं।

इस तरह बदले समीकरण से भारतीय जनता पार्टी को लगता है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अब उसके सामने कोई बड़ी चुनौती नहीं रह गई है। जाट बिरादरी के बीच दबदबा रखने वाले चौधरी परिवार के दम से हारी सीटों पर भी कमल खिलाने की राह अब आसान हो गई है। मुस्लिम बहुल सीटों पर त्रिकोणीय लड़ाई में सपा-कांग्रेस और बसपा उम्मीदवारों के बीच वोटों के बिखराव का फायदा तो उसे मिलेगा ही।

जहां तक पिछले चुनाव में पूर्वी उत्तर प्रदेश की गाजीपुर, घोसी, लालगंज, अंबेडकरनगर, जौनपुर, श्रावस्ती जैसी सीट पर हार को जीत में बदलने की बात है तो भाजपा को लगता है कि अबकी सपा और बसपा के अलग-अलग लड़ने से उसके सामने पहले जैसी चुनौती नहीं है। फिर, इन सीटों पर सामाजिक समीकरण मजबूत करने के लिए सुभासपा जैसे क्षेत्रीय दलों को पहले ही साथ लिया जा चुका है। पूर्व मंत्री दारा सिंह चौहान भाजपा में वापसी कर चुके हैं। अपना दल (एस) और निषाद पार्टी का साथ है ही। क्षेत्रीय दलों के वोट बैंक के प्रभाव को देखते हुए हारी सीटों में से भी कुछ पर उन दलों के ही प्रत्याशियों को लड़ाकर भाजपा इस बार हर हाल में जीत सुनिश्चित करने की तैयारी में है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि बिखरे विपक्ष और एनडीए के बढ़ते कुनबे के साथ ही डबल इंजन सरकार के काम व मोदीमय संग राममय माहौल के बीच होने वाले लोकसभा चुनाव से भाजपा का अब 'मिशन क्लीन स्वीप' कामयाब होता दिख रहा है।

छत्तीसगढ़ डायरी

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रथ पर भाजपा

डा. सुनील गुप्ता
संपादकीय प्रभारी, बिलासपुर

अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा का महत्वपूर्ण पर्व संपन्न हो गया है। इसी के साथ ही शहर से लेकर गांव का वातावरण राममय हो गया है। इसकी पृष्ठभूमि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने काफी पहले लिख दी थी। 14 दिनों तक मंदिरों की साफ-सफाई और रंगाई-पोताई के लिए उन्होंने देशवासियों से आह्वान किया था। इस पर उन्होंने स्वयं भी अमल किया। श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पहले ही देशवासी अपने अपने अंदाज में भगवान राम के प्रति भक्ति और आस्था प्रकट कर रहे थे। अब तो देश के साथ ही छत्तीसगढ़ भी श्रीराम के रंग में रंगते नजर आ रहा है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद और भाजपा के रणनीतिकारों ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना को जगाने के लिए जो वातावरण बनाया और अभियान चलाया इसे उसी का सुफल परिणाम कहा जा सकता है कि समूचा प्रदेश श्रीराम की भक्ति में इतरा रहा है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का ऐसा माहौल विरले ही देखने को मिलता है।

राममय वातावरण में राम की भक्ति का ऐसा ज्वार कि हर कोई अयोध्याधाम पहुंचकर रामलला का दर्शन करने की चाह रखने लगा है। भक्ति के मार्ग पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद और भाजपा सेतु का काम करने लगे हैं। अयोध्या में रामलला दर्शन के लिए प्रदेशभर में आस्था स्पेशल ट्रेन की शुरुआत हो गई है। इसका शुभारंभ दुर्ग से हुआ। दुर्ग जिले और बिलासपुर के यात्रियों को लेकर पहली आस्था स्पेशल ट्रेन अयोध्या के लिए रवाना हुई। नौ फरवरी को यह ट्रेन रामभक्तों को लेकर वापस आई। दूसरी आस्था स्पेशल अयोध्या रवाना हो चुकी है। यह सिलसिला फिलहाल चलता रहेगा।

इस बीच अब मोदी की गारंटी पूरी करने का अवसर आ रहा है। विधानसभा चुनाव के समय भाजपा ने अपने घोषणा पत्र में अयोध्या दर्शन की घोषणा की थी। इसका उल्लेख करना इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और गृह मंत्री अमित शाह घोषणा पत्र दिल्ली से लेकर रायपुर पहुंचे थे। उनकी मौजूदगी में प्रदेश भाजपा के प्रमुख नेताओं ने घोषणा पत्र को सार्वजनिक किया था। अब तो यह मोदी की गारंटी ही बन गई है। एक और गारंटी के पूरी होने का समय नजदीक आ गया है। प्रदेशवासियों को निश्शुल्क अयोध्या दर्शन कराने भाजपा लेकर जाएगी। जल्द ही मोदी की एक और महत्वपूर्ण गारंटी पूरी होगी। तब सांस्कृतिक राष्ट्रवाद अपने चरमोत्कर्ष पर नजर आए जो अचरज की बात भी नहीं होनी चाहिए। भाजपा के प्रमुख रणनीतिकार भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रथ की सवारी करते नजर आने लगे हैं।

रायपुर स्टेशन पर आस्था स्पेशल ट्रेन से अयोध्याधाम के लिए प्रस्थान करते रामभक्त। नईदुनिया

वस्तुतः भाजपा की राजनीति में रथ यात्रा का अपना खास महत्व है। यह वह दौर था जब देश में एक चिरपरिचित नारे का जोर चलता था। अटल-आडवाणी कमल निशान, मांग रहा है हिंदुस्तान। नारों का प्रभाव ऐसा कि देश की राजनीति में हलचल मची। पूर्व उप प्रधानमंत्री व भारत रत्न से सम्मानित होने वाले लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा भारतीय राजनीति कहें या फिर भाजपा की राजनीति, दोनों ही अर्थों में टर्निंग प्वाइंट रही। इसके बाद भाजपा ने देश की राजनीति में जो अमिट छाप छोड़ने का काम प्रारंभ किया अब तक जारी है। अब मोदी और शाह युग में गारंटी पर जोर है। भरोसे की राजनीति के रथ पर दोनों शीर्ष नेता सवार हैं। मूल्य की राजनीति पर भरोसा करने और लोगों को भरोसा दिलाने में इन्होंने महत्वपूर्ण काम किया है।

ऐसे हो रहा बूथ मजबूत : भाजपा का एक चिरपरिचित नारा है। हमारा बूथ सबसे मजबूत। बूथ जीतो और सरकार बनाओ। दोनों नारों का निहितार्थ है और स्पष्ट संदेश भी। अगर आपने अपना बूथ जीत लिया तो कोई ताकत नहीं जो आपको प्रदेश में या देश में सरकार बनाने से रोक ले। बूथ मजबूत हुआ तो समझिए देश और प्रदेश की राजनीति में आपसे अच्छा चुनाव प्रबंधक नहीं है। इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए बूथों से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को मजबूत करने का काम भाजपा ने प्रारंभ किया है। अयोध्याधाम की यात्रा के लिए पोलिंग बूथों से टीम तैयार हो रही है। यह सूची मंडल और फिर जिला स्तर पर पहुंच रही है। विहिप, आरएसएस व भाजपा व सहयोगी संगठन के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं की टीम तन मन से यह काम करने में जुटी हुई है। श्रद्धालुओं के सत्कार के पीछे उन्हें पूरी तरह धार्मिक वातावरण देना और राम की भक्ति में पूरी तरह रमा देना है। रामलला के दर्शन पूजन के बाद राम की भक्ति से ओत-प्रोत श्रद्धालु जब अपने गांव व शहर पहुंचेंगे तब अपने मन की भावना को उसी अंदाज में व्यक्त करेंगे जैसा उन्होंने देखा और अनुभव किया है। जाहिर है बूथों से बहने वाली सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की हवा भाजपा के पक्ष में सकारात्मक माहौल बनाने में सहयोगी की भूमिका निभाएगी।

सीएम समेत मंत्रिमंडल भी करेगा दर्शन : छत्तीसगढ़ समेत भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और उनका मंत्रिमंडल और विधायक रामलला के दर्शन के लिए अयोध्या जाएंगे। शीर्ष नेतृत्व ने कुछ इस तरह के निर्देश दिए हैं। आने वाले दिनों में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, मंत्रिमंडल के सहयोगियों, भाजपा विधायकों व प्रमुख पदाधिकारियों के साथ रामलला दर्शन के लिए अयोध्या कूच करते दिखाई देंगे।

****